ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

जुलाई–2018

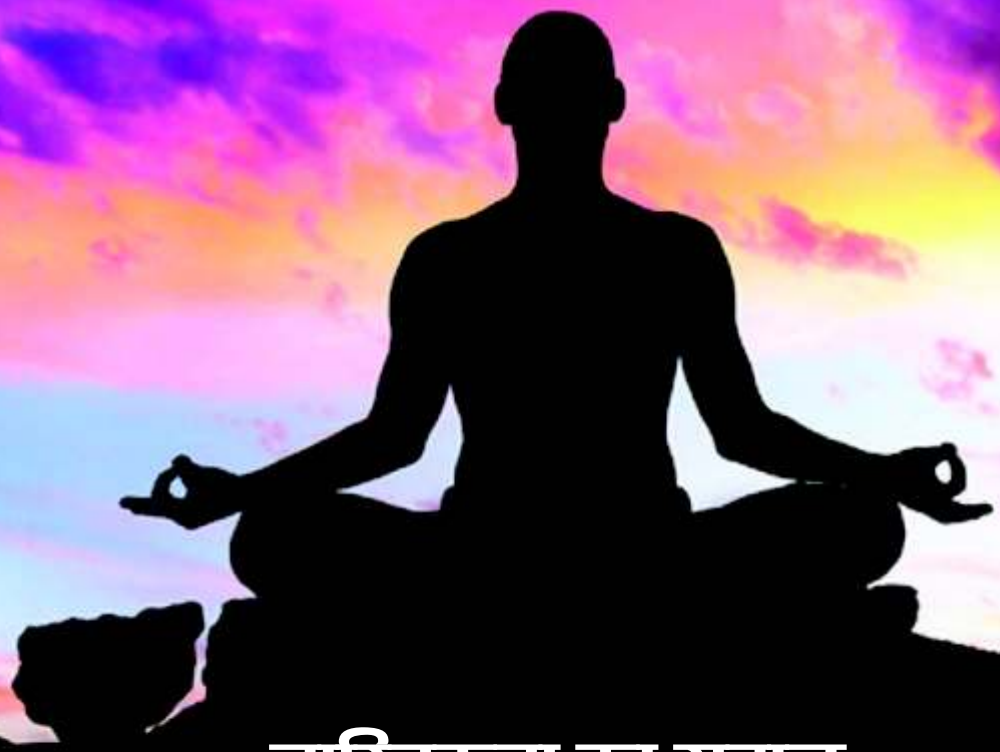

नास्तिकता का सवाल

₹10

प्रकाशन का 20वां वर्ष

स्वर्गीय माता रोशनी देवी जी : श्रद्धांजलि दिवस की झलकियां

माता रोशनी देवी जी के श्रद्धांजलि दिवस पर हवन करते हुए परिजन।

श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पं० जगदीश चन्द्र वसु, पं० रामेश्वर, मा० दयाराम, प्रो० धर्मबीर, यशवीर आर्य, जयप्रकाश आर्य, प्रतिष्ठा व प्रतिभा आर्या।

उपस्थित गणमान्य व्यक्ति व परिजन

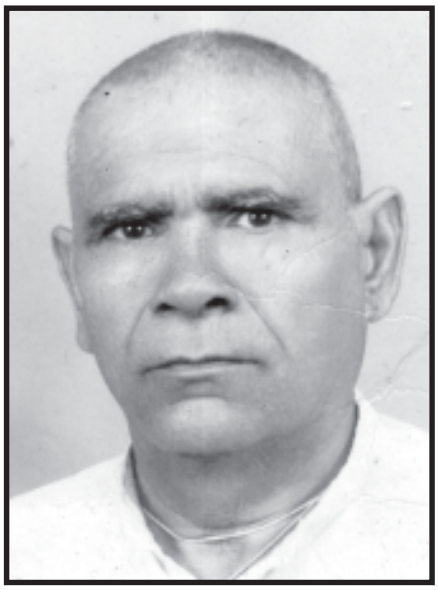

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : **सहदेव समर्पित**
(चलभाष **09416253826**)
उपसम्पादक : **सत्यसुधा शास्त्री**
प्रबंध संपादक : **सुभाष श्योराण**
आदरी सम्पादक : **यज्ञदत्त आर्य**
सह-सम्पादक : **राजेशार्य आट्टा**
डॉ० विवेक आर्य
विधि परामर्शक : **डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट**
सहयोग : **आचार्य आनन्द पुरुषार्थी**
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
कार्यालय व्यवस्थापक: **रविन्द्रकुमार आर्य**
कम्प्यूटर सज्जा : **बिशम्बर तिवारी**

सहयोग राशि

एक प्रति	:	१०.०० रु.
वार्षिक	:	१२०.०० रु.
आजीवन	:	१०००.०० रु.

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

जुलाई, २०१८ ई०

वर्ष : २० अंक : ६ ~~आषाढ~~ २०७५ विक्रमी
स ष्टि संवत्-१९६०८५३११६, दयानन्दाब्द : १९५

क्या? कहाँ?....

आलेख

सामवेद अनुशीलन (पृथिवी-पति) ६
चुनौती (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह) ७
आपकी सन्तान ही देश का भविष्य है (राष्ट्र-निर्माण) १०
निष्काम कर्म (आत्म चिन्तन) १२
छोटी-छोटी पर मोटी बातें (सामाजिक-चिन्तन) १४
महान् गौभक्त हरफूलसिंह जाट जुलानी वाला १६
राह वही जो प्रभु बताये (आस्तिकता) १८
जीवन को उत्तम बनाने के चार उपाय : साम (जीवन-दर्शन) २०
ईश्वर में अविश्वास क्यों (आस्तिकता) २२
ज्वर की सफलतम प्राकृतिक चिकित्सा (स्वास्थ्य चर्चा) २४

लघु-कथा/प्रसंग : सबसे शक्तिशाली वस्तु/ नम्रता का पाठ-२७
कविता : ९, २८,
स्थायी स्तम्भ : प्रेरणा पथ-८, बाल वाटिका-२६, भजनावली-२८
साथ में : अंधकार से प्रकाश, पतन की पराकाष्ठा, धन्यवाद एवं कृतज्ञता

Find us on: facebook
https://www.facebook.com/ShantidharmiHindiMasik

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ९४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

।। आत्म निवेदन।।

जीवन में आस्तिकता

❒सहदेव समर्पित

महर्षि मनु ने नास्तिकता की परिभाषा दी है- 'नास्तिको वेद निन्दकः।।' जो वेद का निन्दक है, वह नास्तिक है। इस शब्द का भी अन्य शब्दों की तरह इतना दुरुपयोग हुआ कि मत मतान्तर के लोगों ने अपने मत को न मानने वालों को नास्तिक कहना शुरु कर दिया। मनु की परिभाषा तार्किक, प्रामाणिक और आधिकारिक है। वेद का सामान्य अर्थ ज्ञान है। जो ज्ञान की निन्दा करता है और सत्य ज्ञान के विपरीत आचरण करता है, उसका नास्तिक होना सम्भव है। सत्य साम्प्रदायिक नहीं होता है। वह सबके लिए लिये सब काल में आचरणीय और अनुकरणीय होता है। वेद भी साम्प्रदायिक नहीं है, ईश्वर भी सबका है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। इसका आविर्भाव तब हुआ जब संसार में कोई मत-मतान्तर नहीं था। यह ईश्वरीय ज्ञान सब मनुष्यों के लिए है। ईश्वर सर्वज्ञ है। उसका ज्ञान कभी पुराना नहीं होता। न ही उसे अपने पुराने दस्तावेजों को रद्द कर नये आदेश जारी करने की आवश्यकता है। पर यह बुद्धिमान मनुष्यों की प्रवृत्ति है कि जब वे सत्य ज्ञान से वंचित होते हैं तो अपनी परिस्थितियों और देश काल के अनुसार कुछ व्यवस्थाएँ बनाते हैं और अपने अनुयायियों को उनके अनुसार जीवन यापन करने की प्रेरणा देते हैं। फिर वह एक मत बन जाता है और स्वार्थी साम्प्रदायी लोग उसे धर्म कहने लग जाते हैं।

ईश्वर के ज्ञान में कोई न्यूनता नहीं होती। मनुष्य के ज्ञान में न्यूनता होती है। जैसे शेखचिल्ली सारा दिन साबुन की दुकान पर बैठा साबुन को मिठाई समझकर खाता रहा। उसकी आंखों से आंसू बहते रहे पर वह समझ नहीं पाया कि मिठाई कड़वी क्यों है? ऐसे ही सम्प्रदायों को धर्म समझकर मत मतान्तरों के परस्पर के झगड़े देखकर, उन मत मतान्तरों में आत्मिक उन्नति और दुःखों से छूटने का कोई तार्किक व प्रामाणिक उपाय न देखकर, ईश्वरीय आज्ञा के अनुरूप पुरुषार्थ न करके चमत्कारों के सहारे कल्याण की आशा लिये हुए, अविद्या के अन्धकार में पड़े रहकर मनुष्य यही सोचकर रह जाता है कि धर्म इतना दुःखदायी क्यों है। उसे पता ही नहीं कि यह धर्म नहीं, मनुष्यकृत मत है। उसकी आस्था डगमगाने लगती है, वह नास्तिक हो जाता है।

वस्तुतः नास्तिक होना कोई गाली नहीं है। मनुष्य के ज्ञान और समझ के स्तर में जीवन भर परिवर्तन होता रहता है। यदि मनुष्य जिज्ञासा के कारण और जिज्ञासा का समाधान न मिलने के कारण 'नास्तिक' होता है तो उसकी 'नास्तिकता' एक न एक दिन अवश्य दूर हो सकती है। पर जो अपने मनुष्य होने के दायित्त्व बोध पर पर्दा डालने के लिए अपने आप को 'नास्तिक' कहता है और रात के अन्धेरे में तान्त्रिकों से कुण्डली पढ़वाता है तो उसकी नास्तिकता 'असाध्य' है। जो स्वयं तो उचित/अनुचित साधनों से दुनिया के सब भोग भोगते हैं और आम जनता को परीक्षा के नाम पर और भविष्य के काल्पनिक सुखों का लालच दिखाकर दुःख और अविद्या के अन्धकार में पड़े रहने को प्रेरित करते हैं, वे परम नास्तिक हैं। ईश्वरीय आज्ञा और धर्म तो यह है कि जीवन में सब प्रकार से उन्नति प्राप्त करो और आगामी शाश्वत जीवन के लिए भी साधन संग्रह करते रहो। नास्तिक के रूप में प्रसिद्ध बलिदानी भगतसिंह आदि स्वयं को नास्तिक कहते हुए भी परम आस्तिक हैं क्योंकि वे पुरुषार्थ और अन्याय के विरुद्ध धर्मयुद्ध का ईश्वरीय आज्ञा का पालन करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे देते हैं।

आस्तिक होने का अर्थ अपने को आस्तिक कहना मात्र नहीं है, अपितु सत्य ज्ञान प्राप्त करते रहने की जिज्ञासा और प्राप्त सत्य ज्ञान के अनुसार आचरण करने का नाम ही आस्तिकता है। ईश्वर क्या है? उसका सृष्टि में क्या स्थान है? उसके क्या गुण और कर्म हैं? और सबसे बढ़कर- उसका हमारे जीवन में क्या स्थान है। उसकी आज्ञा क्या है जो धर्म है। धर्म का क्या चिह्न है? ईश्वर की आज्ञा पालन करने वाले की क्या पहचान है? उसका आचरण और व्यवहार ही उसकी पहचान है। धर्म उसके व्यवहार में झलक-झलक उठेगा। उसे पहचान का कोई संकट नहीं है। उसके जीवन में आनन्द ही आनन्द है। वह अभावों में भी परेशान नहीं है। वह भय में भी अभय है। वह अन्यायी चक्रवर्ती सम्राट् से भी नहीं डरता और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता है। संसार के सभी प्राणी उसके मित्र हैं। वह सबको मित्र की दृष्टि से देखता है। यह भोग्य पदार्थों को स्वामी बनकर नहीं भोगता, वह स्वामी के पदार्थों को उसका धन्यवाद करते हुए सेवक बन कर भोगता है। वह ईश्वर की न्याय व्यवस्था=कर्म फल व्यवस्था को समझता है, अतः कोई विपरीत आचरण नहीं करता। युक्ति और प्रमाणों से दृढ़ निश्चय करके वह अपने इस मनुष्यता रूप धर्म पर स्थिर रहता है। यही आस्तिकता है। यह हमारे जीवन में ओतप्रोत होगी तभी हम मनुष्य जीवन के वास्तविक आनन्द को पाने के अधिकारी हो सकेंगे।

आपकी सम्मतियाँ

प्रवास के कारण इस अंक का अवलोकन तो नहीं कर पाया लेकिन इतना अवश्य कहना चाहूँगा कि आप= आर्यसमाज का काम बहुत सराहनीय है और आने वाले समय में आर्य समाज को प्रमुख कार्य हिन्दू धर्म के लिए आगे आना होगा और धर्म संसद जैसी चीजों में अगुवाई करनी होगी।

सिद्धांत कुमार ३४/५४ प्रताप नगर सैक्टर ३, RHB क्वार्टर्स, सांगानेर, जयपुर-३०२०३०

शांतिधर्मी एक सम्पूर्ण पत्रिका है। इस में जीवन को सही मार्ग पर चलाने हेतु सम्पूर्ण पठन सामग्री विद्यमान है। अच्छी प्रेरक कहानियाँ, गीत, कविता, धर्म, स्वास्थ्य आदि सब कुछ सारगर्भित है। बहुत बहुत शुभकामनायें।

प्रिं० राजकुमार वर्मा (प्रिंसिपल इक्कस) पटियाला चौक जींद-१२६१०२

बेहतरीन मासिक पत्रिका शांतिधर्मी का जून २०१८ अंक मिला। मुखपृष्ठ पर 'माता निर्माता भवति' चित्र बहुत मनोहारी है। संपादकीय 'जीवन का संगतिकरण' दिलचस्प, ज्ञानवर्धक तथा शिक्षाप्रद है। बेशक सारी उम्र सिर्फ धन कमाने, स्वयं को और परिवार को प्रत्येक प्रकार से संतुष्ट करने में बीत जाती है। हम जीवन का उद्देश्य मात्र यही समझते हैं। अगर गहराई से देखा जाए तो परमात्मा ने हमें इस दुनिया में लोक, परलोक सुधारने के लिए भेजा है। कमाकर परिवार की देखभाल करना भी आवश्यक है। हम अपनी आमदनी का कुछ हिस्सा दीन-दुखियों, बीमारों, लाचारों, अनाथों की सेवा में लगाएँ। हमारे समाज के कुछ हिस्सों में अब भी यह परंपरा है कि अपनी कमाई का कुछ भाग परोपकार लिए खर्च किया जाता है। जन्म देने वाले परमात्मा का हर वक्त इस बात के लिए शुक्र करना चाहिए कि उसने हमें बहुत सारे लोगों से बेहतर रखा है, सुख सुविधाएं दी हैं, अच्छा स्वास्थ्य दिया है, अच्छी पोजीशन में रखा है। हम समाज के प्रति अपने कर्तव्य को न भूलें। कौन जानता है कि कल को हमारी स्थिति ऐसी रहेगी या बुरी हो जाएगी। कहा भी जाता है- कर भला, हो भला। पत्रिका की अन्य सामग्री भी हमेशा की तरह उपयोगी है।

प्रो० शामलाल कौशल
975-बी/२० ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१

भौतिक उन्नति पर आध्यात्मिकता का अंकुश ही मनुष्य को आत्मिक सन्तुष्टि और मानसिक शांति दे सकता है। (मई अंक) यह जीवन में आचरण करने योग्य है। यज्ञ द्वारा मानव की पाशविक प्रवृत्तियों को दिव्य बनाकर समाज बलवान बन सकता है। अगली पीढ़ी में अभी से स्वाध्याय करने की भावना को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है, तभी हमारा समाज उन्नत बन सकता है। विवेक आर्य जी ने 'ना दलील, ना वकील ना अपील' वाले काले कानून पर विस्तार से प्रकाश डाला है। शासन के हर विभाग में कितना भ्रष्टाचार व्याप्त है, शामलाल जी ने इस पर से परदा उठा दिया है। फिर भी किसी को समझ नहीं आती तो क्या किया जाये! मनोहरलाल जी ने जीवन भर स्वस्थ बने रहने के लिए इकतीस सूत्र बताये हैं, उनमें मैं अधिकांश का पालन करता हूँ। मेरी आयु ८५ वर्ष की है। मैं नीरोग तथा स्वस्थ हूँ। हालांकि आयु का प्रभाव तो सभी पदार्थों पर पड़ता है। सभी को इन सूत्रों को अपनाना चाहिये। बाल-वाटिका तो बच्चों तथा बड़ों- सभी के लिए ज्ञानवर्धक है।

रामप्रसाद श्रीवास्तव
५/२५९ विराम खण्ड गोमती नगर
लखनऊ २२६०१०

जून अंक में आपने मेरे 'हास्यम' को छापा, इसके लिए आपका बहुत बहुत धन्यवाद। मुझे बाल वाटिका बहुत अच्छी लगती है। मैं पत्रिका को अपने बाबाजी से पहले पढ़ती हूँ।

कीर्ति कटारिया सुपौत्री बाबू रामप्रताप आर्य
ग्रा० पो० पाल्हावास, जिला रेवाड़ी-१२३४०१

सम्मान्य पाठक!

कई बार साधारण डाक से भेजी गई महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ हम तक नहीं पहुंच पाती हैं। आप अपनी सम्मतियाँ, सुझाव, प्रतिक्रियाएँ, आगामी कार्यक्रमों की सूचनाएँ ई मेल या व्हाट्स् एप अथवा पंजीकृत डाक से भेजें। शांतिधर्मी के वार्षिक व आजीवन सदस्यता शुल्क में रजिस्टरी का खर्च शामिल नहीं है। यदि आप अपनी पत्रिका पंजीकृत डाक से मंगाना चाहते हैं तो एक वर्ष के लिये २५०/- अतिरिक्त जोड़कर शुल्क जमा करायें। जहाँ १० या अधिक ग्राहक एक स्थान पर रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगाते हैं, उनका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। आप सहयोग बनाये रखेंगे, प्रार्थना है।

व्हाट्स् एप नम्बर : 99963 38552
Email- shantidharmijind@gmail.com

प थिवी-पति

-लेखक: पं० चमूपति

अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत् पतिः पृथिव्या अयम्।
अपा रेतांसि जिन्वति।।७।।२७

ऋषिः- विरूपः= विशेष रूप वाला।

(अयम्) यह (अग्निः) अग्नि-देव (पृथिव्याः) पृथिवी का (पतिः) पति, (दिवः) द्युलोक का (ककुत्) कुहान-उभरा हुआ शिखर है। (मूर्धा) यह मूर्धा-स्थानीय होकर (अयाम्) प्रजा-जनों की (रेतांसि) उत्पादक-शक्तियों को (जिन्वति) संजीवित करता है।

व्यक्ति के शरीर में जीवनाग्नि जितनी अधिक हो, उसमें वीर्य का उतना अधिक प्राबल्य रहता है। यही अवस्था राष्ट्र के शरीर की है। राष्ट्राग्नि जितना अधिक प्रज्वलित होगी, राष्ट्र की प्रजा में उत्पादक कलाओं का उतना विकास होगा। जातियों के राष्ट्रिय-जीवन के युग हमेशा उत्पादक कलाओं की सर्वांगीण वृद्धि के युग हुए हैं।

पृथिवी का पति-रक्षक=सम्राट् होता है और सम्राट को वेद में अग्नि कहा गया है। यह इसलिए कि वह मूर्त यज्ञ है। उसने ब्रह्माण्ड रहस्य को समझा है। वह जानता है कि विश्व यज्ञ के=परोपकार के सहारे चल रहा है।

यज्ञ की भावना दिव्य है। द्युलोक के सभी गोलक-सभी ग्रह-उपग्रह यज्ञ कर रहे हैं। वे मानो यज्ञाग्नि की चिनगारियाँ हैं। सम्राट् आध्यात्मिक द्युलोक का वासी है। यह वहाँ की शिरोमणि-ज्योति है। जो आध्यात्मिक तत्त्व साधारण लोगों की आँखों से छिपे रहते हैं, वे सम्राट् के जीवन में साक्षात् प्रकट हो गये हैं।

संसार में स्वार्थ काम कर रहा है। एक व्यावसायिक पुरुष यह समझ ही नहीं सकता कि आत्म-त्याग सबसे उत्तम नीति है। वैदिक सम्राट् इस नीति का मूर्त उदाहरण है। सदाचार के जो सूत्र साधारण जनों को अव्यवहार्य प्रतीत होते हैं, वैदिक सम्राट् के व्यवहार का आधार ही वही हैं। वह सत्य ही का आचरण करता है। हिंसा का उसे सपना तक नहीं आता। सबसे बड़ी बात यह है कि वह साधु-स्वभाव होता हुआ भी नीति-निपुण है=बुद्धि का धनी है।

वह प्रजा-जनों का सिर-मोर है। उसका हृदय तो विशाल है ही; उसका मस्तिष्क भी उत्तम है। वह खूब सोचता है और जो कुछ भी वह सोचता है, वह ध्रुव सत्य होता है। इसी से प्रजाओं ने उसे अपने सिर-माथे पर बैठा रखा है।

यज्ञिय जीवन निर्माणात्मक होता है। यज्ञ है ही सृष्टि की कला। जिस क्रिया से कोई वास्तविक लाभ न हो, जिससे कोई भौतिक अथवा मानसिक उन्नति न हो, वह यज्ञ नहीं। यज्ञ की सफलता=स-फलता निश्चित है। वैदिक सम्राट् का मस्तिष्क इसी उधेड़-बुन में लगा रहता है कि उसकी प्रजाएँ नई-नई उत्पादक-कलाओं की सृष्टि करती रहें-इनका भौतिक तथा आध्यात्मिक विकास उत्तरोत्तर बढ़ता जाए। इनमें यज्ञ की भावना दिन-दिन उन्नत होती जाए।

उत्पादक कलाएँ ही जीती-जागती जातियों का वीर्य हैं। इन्हीं कलाओं के सहारे इन जातियों की कामनाएँ फलती-फूलती हैं। खेती, शिल्प, व्यापार, उद्योग, शिक्षा, साहित्य, संगीत, कविता, मूर्त्ति-निर्माण-ये सब कलाएँ अपने-अपने क्षेत्र में नई-नई सम्पत्ति की सृष्टि कर मानव-जाति के वैभव में उत्तरोत्तर वृद्धि कर रही हैं।

ये सब चमत्कार यज्ञाग्नि के हैं। सम्राट् इस यज्ञाग्नि का प्रतिनिधि है। वह कला-निर्माण की इन शक्तियों को खूब उत्तेजना देता है।

व्यक्ति के शरीर में जीवनाग्नि जितनी अधिक हो, उसमें वीर्य का उतना अधिक प्राबल्य रहता है। यही अवस्था राष्ट्र के शरीर की है। राष्ट्राग्नि जितना अधिक प्रज्वलित होगी, राष्ट्र की प्रजा में उत्पादक कलाओं का उतना विकास होगा। जातियों के राष्ट्रिय-जीवन के युग हमेशा उत्पादक कलाओं की सर्वांगीण वृद्धि के युग हुए हैं। वेद की अग्नि 'विश्व-वेदाः' सर्व व्यापक है। उसका उद्देश्य उन्नति की उभरी हुई=उच्चतम-चोटी है, वह देश-देशान्तर की प्रजाओं का सिर-मौर है, वह सम्पूर्ण मानव-जाति की उत्पादन-शक्ति को सफलता की ओर प्रेरित करता है। वैदिक यज्ञ सार्वदेशिक है।

सम्राट् की स्थिति सूर्य की है। सूर्य भौतिक द्युलोक का कुहान है तो सम्राट् प्रजाओं की निर्माण-शक्ति का।

ऐसा सम्राट् कौन है? वेद के शब्दों में 'अयम् अग्नि'-यह आग। क्या 'यह' का अर्थ 'मैं' नहीं? हाँ हूं तो मैं भी विश्व-याग ही का एक अंग। तो मैं ही क्यों न यत्न करूँ कि यह सम्राट-पद मुझे ही प्राप्त हो जाए?

❐❐❐

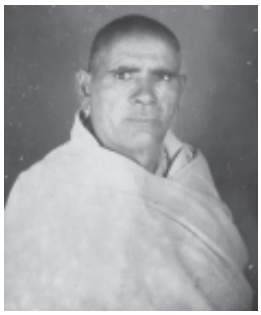

शांतिप्रवाह--- पुनर्प्रकाशन जनवरी २००४ अंक का सम्पादकीय

चुनौती

❒स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्योपदेशक, संस्थापक शांतिधर्मी

स्वतंत्रता संग्राम में जीवन का बलिदान करने वालों का अवमूल्यन कोई लाख प्रयत्न करके भी नहीं कर सकता। हो सकता है इतिहास के पन्नों से कुछ अक्षर छुपा लिए जाएँ, लेकिन जनमानस में लिखे हुए इतिहास से उनकी कीर्ति को कोई नहीं छुपा सकता।

मनुष्य का जीवन एक वरदान है तो एक चुनौती भी है। जो इस चुनौती को स्वीकार कर लेता है, वही वास्तविक जीवन का आनन्द उठा सकता है। जो इस चुनौती को स्वीकार करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता–वह इतिहास की अंधी गलियों में खो जाता है। जिन्होंने इस चुनौती को स्वीकार किया वे लोगों के बीच न होते हुए भी जननायक हैं। ऐसे ही एक जननायक हैं नेता जी सुभाष चन्द्र बोस, जिन्होंने जीवन की हर चुनौती को स्वीकार किया और यही कारण है कि भारतीय जनमानस किसी भी नेता से अधिक सुभाषचन्द्र बोस के प्रति श्रद्धा और सम्मान रखता है। सुविधा भोगी देशभक्ति में जेलों में रहकर भी सुख भोगे जाते हैं, लेकिन वसु ने स्वयं युद्धभूमि में उपस्थित रहकर देश के सिपाहियों के हृदय पर अधिकार कर लिया। अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ मातृभूमि की बलिवेदी पर होम करने के बाद भी उनकी जीवन यात्रा किस तरह सम्पन्न हुई, यह भी देशवासी अब तक नहीं जान पाए, यह एक बड़ी विडम्बना है।

❒नेता जी ने जीवन की चुनौती को स्वीकार किया। अपनी सुख–सुविधाओं को लात मारकर उन्होंने उस रास्ते का वरण किया–जिसमें पद–पद पर मृत्यु देवी का आह्वान था। नौ साल के बच्चे की उम्र ही क्या होती है–जब वह अपनी माता को दुर्गा माता की पूजा करते देखता है–तो पूछता है–माता इनकी पूजा क्यों कर रही हो? माता ने कहा कि बेटा–यह माता है–यह हमें सब कुछ देती है। सुभाष उत्तेजित होकर पूछता है कि ''क्या यह आजादी देती है?'' माता ने शायद बाल सुलभ प्रश्न की गम्भीरता की ओर ध्यान न देते हुए कुछ सोचकर कह दिया कि हाँ देती है। सुभाष बोल उठता है–तब तो माँ, इनको हल्दी रोली का तिलक नहीं, इन्हें खून का तिलक ही लगाना चाहिए। सुभाष अपनी अंगुली काटकर दुर्गा की मूर्ति के माथे पर तिलक लगाने का प्रयास करता है। नौ साल का बच्चा भी जानता है कि आजादी प्राप्त करने के लिए खून की भेंट चढ़ानी पड़ेगी। वही सुभाष नेता जी के रूप में आह्वान करते हैं–''तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।''

❒आजादी की बलिवेदी पर खून बहाने वालों के लिए यह कभी चिंता का विषय नहीं रहा कि उन्हें श्रेय मिलता है या नहीं। लेकिन मातृभूमि पर मिटने वाले जियाले नौजवानों की कभी कमी नहीं रही। टोले के टोले फाँसी की काल कोठरियों में जीवन की विजय के गीत गाते रहे, फाँसी के फंदों को उपहार समझकर चूमते रहे। जीवन का मोह उन्हें अपने मार्ग से हटा नहीं सका। मृत्यु का भय उनको विचलित नहीं कर सका।

❒यदि चालीस करोड़ की जनसंख्या के गणित से देखा जाए तो ऐसे लोगों की संख्या बहुत कम थी। लेकिन इतिहास का निर्माण थोड़े लोग ही किया करते हैं। जो लोग यह कहते हैं कि अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों से विवश होकर अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा तो वे कृतघ्नता करते हैं। स्वतंत्रता संग्राम में जीवन का बलिदान करने वालों का अवमूल्यन कोई लाख प्रयत्न करके भी नहीं कर सकता। हो सकता है इतिहास के पन्नों से कुछ अक्षर छुपा लिए जाएँ, लेकिन जनमानस में लिखे हुए इतिहास से उनकी कीर्ति को कोई नहीं छुपा सकता।

❒जिस गण तंत्र के लिए संघर्ष किए गए थे–वह गणतंत्र तो आना अभी शेष है। कभी–कभी तो यह भीड़ तंत्र लगता है, जिसमें वोटों की राजनीति होती है, राष्ट्रवाद की नहीं। राजनीति जिसे धर्म कहकर प्रतिष्ठित स्थान दिया गया था। आज अधर्मियों का अड्डा बन गई है। इसमें जन कोई भूमिका नहीं निभा पा रहा है।

❒नेता जी का कथन निरर्थक नहीं हो सकता। आजादी पाने के लिए ही बलिदान की आवश्यकता नहीं होती–बल्कि उसकी रक्षा करने के लिए भी सतर्क त्याग, संघर्ष व बलिदान की आवश्यकता पड़ती है। यह शहीदों का सपना था कि स्वराज्य देश के सभी लोगों के लिए समान रूप से हितकारी होगा, यह अवश्य पूरा होगा। आईए तब तक हम सब अपनी सामर्थ्य के अनुसार सद्विचार और सुसंस्कारों के प्रचार–प्रसार द्वारा अपना–अपना योग दान करते रहें। ❒❒❒

ममतामयी माता स्व0 श्रीमती रोशनी देवी जी को श्रद्धा सुमन समर्पित

परिवर्तिनी संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्।।

इस परिवर्तनशील संसार में प्रतिदिन लोग जन्मते और मरते रहते है। प्रायः करके ऐसे लोगों के जन्म और मृत्यु से संसार में कोई विशेष अन्तर नहीं पड़ता। परन्तु जो व्यक्ति स्वार्थरहित होकर जनकल्याण की भावना से अपना सर्वस्व लगाकर जगत का उपकार करता है, वास्तव में उसी का जन्म लेना सार्थक है। वह स्वयं तो प्रसिद्ध होता ही है साथ ही अपने कुल की प्रतिष्ठा में वृद्धि करता है। ऐसे व्यक्ति का जन्म लेना सार्थक माना जाता है।

२४ जून २०१८ रविवार के दिन श्रीमती रोशनी देवी धर्मपत्नी स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य का 74 वर्ष की आयु में इस संसार को अलविदा कहना परिवार के लिए असहनीय था। इस दारुण दुःख की घड़ी में सम्पूर्ण आर्य जगत् को परिवार के साथ खड़ा देखते हैं। अपने लम्बे वैवाहिक जीवन में उन्होंने अपने पति (स्व० श्री चन्द्रभानु जी आर्य) को समाज सेवा व महर्षि के मिशन को आगे बढ़ाते रहने के लिए पारिवारिक दायित्वों की चिन्ता से मुक्त रखा। वे माता जी ही थीं, जिनके तप व त्याग से स्व० चन्द्रभानु जी आर्य निष्कण्टक अपने मार्ग पर आगे बढ़ते चले गये और अपने जीवन की बुलन्दियों को छुआ। प्रायः कहते हैं कि एक व्यक्ति की सफलता के पीछे एक स्त्री का हाथ होता है। इसके अतिरिक्ति माता जी ने अपने पुत्रों-पुत्रियों व पौत्रों-पौत्रियों को जो मार्गदर्शन, स्नेह व संस्कार दिए उनका विशेष महत्त्व है। इसी वजह से आज वे सभी क्षेत्रों में अपने परिवार व समस्त हरयाणा प्रदेश का नाम देश व संसार में रोशन कर रहे हैं, यह सब उस ममतामयी माँ का ही प्रताप है। ऐसे में उस माँ के सुयोग्य सपुत्रों को भला यह घड़ी कैसे भयभीत कर सकती है! जब पता है कि मृत्यु महामाया है, महाप्रस्थान है, मृत्यु मानो पर्व है, मृत्यु मानो प्रियतम के पास जाना है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय सम्मुलास में लिखा है कि वह सन्तान बड़ी भाग्यवान है, जिसके माता-पिता धार्मिक विद्वान हों। जननी तो हर स्त्री होती है परन्तु माँ के विषय में कहा जाता है-'जो करे पुत्र निर्माण माता सोई'। इसलिए महर्षि मनु ने माँ को दस सहस्र आचार्यों के समान कहा है:-

उपाध्यायान् दशाचार्य आचार्याणां शतं पिता।
सहस्रं तु पितृन् माता गौरवेणातिरिच्यते।।

इन्ही शब्दों के साथ किसी कवि की निम्न पंक्तियों को उद्धृत करते हुए स्व० श्रीमती रोशनी देवी को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रभु से कामना करते हैं।

माता के सिखाये पुत्र कायर और क्रूर होत।
माता के सिखाये पुत्र दाता और शूर है।।
माता के सिखाय पुत्र ब्रह्मचारी बलवान होत।
माता के सिखाय पुत्र जग में मशहूर है।।

प्रो० धर्मवीर 'नम्बरदार' व सभी आर्यसभासद्
ग्रा० गंगायचा अहीर डा० बीकानेर
जिला रेवाड़ी (हरयाणा) १२३४०१

धन्यवाद एवं कृतज्ञता ज्ञापन

हमारी पूज्या माता जी श्रीमती रोशनी देवी का गत २४ जून को लम्बी बीमारी के बाद देहान्त हो गया। ईश्वरीय व्यवस्था के अनुसार उन्होंने अपने गृहस्थ जीवन के दायित्त्वों का उच्चतम स्तर तक निर्वहन किया। उनके निधन से उत्पन्न शोक की स्थिति में जिन साधु संन्यासियों, विद्वानों, सामाजिक और राजनैतिक कार्यकर्ताओं, मित्रों, परिवारजनों ने हमें सान्त्वना और धैर्य प्रदान किया उन सभी महानुभावों का हम हृदय से आभार प्रकट करते हैं। नगर की अनेक आर्य समाज संस्थाओं के अतिरिक्त आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, जिला वेद प्रचार मण्डल, हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था, जनहित विकास परिषद्, नव जागरण साहित्य संस्था नारनौंद, वनवासी कल्याण आश्रम, मैढ सुनार सभा, स्वर्णकार सभा, भारतीय योग संस्थान के अलावा आर्यसमाज नरवाना, आर्यसमाज सफीदों, आर्यसमाज बीकानेर, आर्यसमाज बोदीवाली, आर्यसमाज बिठमड़ा, आर्यसमाज बुडायन, आर्यसमाज उचाना मण्डी, आर्यसमाज डोहानाखेड़ा, आर्यसमाज खटकड़, गुगनराम सोशल वैल्फेयर सोसायटी, भिवानी आदि सभी संस्थाओं के सदस्यगण के प्रति भी हम आभारी एवं कृतज्ञ हैं, जिन्होंने शोक सन्देश के माध्यम से व स्वयं पधारकर हमें साहस प्रदान किया। हमेशा आप के आशीर्वाद व स्नेह की कामना के साथ, आभारी

सहदेव समर्पित, सम्पादक

डॉ० महाश्वेता चतुर्वेदी का गीत

ज्योतिर्मय संसार!

राज्य उलूकों का न चाहता, ज्योतिर्मय संसार।

शाख शाख पर बैठे हैं ये चला रहे व्यापार।
अभी नहीं इनके मग में बाधाओं का संचार।
यहाँ न अब इनके पद का है कोई दावेदार।

मृत्यलोक में जिन्दा लाशों का बढ़ता अंबार।
कलियुग में आराध्य बना है जिनका भ्रष्टाचार।
गबन जमाखोरी घोटाले हत्या और व्यभिचार।

रक्षक बगुले भक्षण का क्या भूलेंगे आचार।
दंतहीन जो मगर मच्छ हैं करते हाहाकार।
तीर्थ भ्रष्ट वैतरणी है अब, धन का पारावार।

जो न डूबता इसमें उसका कब है बेड़ा पार।
आज इसी में निहित समुन्नति के सारे हैं सार।
देशप्रेम की बातें करना ऐसों को निस्सार।

जो जितना है सरल उसी का जीवन उतना भार।
वेद सत्य का कैसे होगा जग में फिर अवतार।
ढूंढ ढूंढ कर समाधान को लोग गए हैं हार।।

–२४ *आंचल कालोनी, श्याम गंज बरेली*–२४३००५

क्या जरूरी है।

शांति के लिए शरीर को गलाना क्या जरूरी है।
धर्म की परिभाषा को बदलते जाना क्या जरूरी है?

हृदय की मसृणता हो या विचारों की कट्टरता,
पाप नाश हेतु गंगा में नहाना क्या जरूरी है?

दुखियारों के आंसू पोंछना क्या मानवता का तकाजा नहीं,
पत्थर की मूरत सम्मुख माथा झुकाना क्या जरूरी है?

आतंकवाद के लंबे कदम ललकारते रहते हैं,
रक्षा हेतु घर में अपने को छुपाना क्या जरूरी है?

अतीत के आदर्श मिथकवत् व्यर्थ कैसे हैं?
सामयिक यथार्थ का तानाबाना क्या जरूरी है?

डॉ० स्वर्णकिरण,
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हि० वि० किसान कालेज,
सोहसराय, (नालंदा) ८०३११८

गज़लें

❐देवदत्त 'देव'

तेरा लहजा कमाल करता है
मेरे दिल को निहाल करता है

भूल करता है आदमी कितनी
जिंदगी से सवाल करता है

दूसरों की लिहाज रखने का
आदमी कब खयाल करता है

हाथ खाली जहां से जाना है
किसलिए तू मलाल करता है

झूठ सुन ही नहीं सकेगा वो
खून उसका उबाल करता है

आदमी प्यार की दुआ करता
प्यार पे ही बवाल करता है

कुछ निराले हैं 'देव' के किस्से
काम वो बेमिसाल करता है

❑❐❐

मौत आने से पहले खबर है तो क्या
हर मरज की दवा अपने घर है तो क्या

चैन की नींद हासिल नहीं है उन्हें
जिंदगी भर कमाया ये जर है तो क्या

सिलसिला हादसों का रुकेगा नहीं
लाख दिल में समाया ये डर है तो क्या

लाजमी लेगी ये मौत आगोश में
शौहरत इस जहां में अगर है तो क्या

रंज कुछ तो उन्हें भी रहे भूल का
रात दिन गमजदा तू इधर है तो क्या

जिंदगी एक उम्मीद का नाम है
हादसा हर कदम पे मगर है तो क्या

'देव' रहबर बने हैं जमाने के अब
सामने उलझनों की डगर है तो क्या

२६/२, नारनौंद, हिसार (हरि०)

राष्ट्र-निर्माण

आपकी सन्तान ही देश का भविष्य है

❒रामफल सिंह आर्य, मं० नं० 78/एस-4, बी०एस०एल० कालौनी,
सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि०प्र०)- 175019 (094184 77714)

यह बात मन में अवश्य रखिये कि आपकी संतानें आपके लिये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यदि वे बन गई तो जानिये सब बन गया और कहीं बिगड़ गई तो लाख धन दौलत हो, सम्पत्ति हो, बेकार हो जाती है। यदि हमारे बच्चे हमारा सम्मान करना सीख गये तो जीवन सफल हो जाता है, नहीं तो आज नर्क तो बनता ही जा रहा है।

घर में खेलते-कूदते बच्चे किसको अच्छे नहीं लगते। अपने भोले-भाले चेहरों, अबोध चेष्टाओं और किलकारियों से वे सभी को बरबस अपनी ओर खींच लेते हैं। उनकी भोली और निश्छल बातें रोते हुए व्यक्ति को भी हंसा देती हैं। वे माता-पिता के तो प्रिय होते ही हैं इसके साथ-साथ अन्य सदस्य भी उन्हें लाड़-चाव से रखते हैं। यदि संयुक्त परिवार हुआ तो दादा-दादी, ताऊ-चाचा आदि भी उनके लाड़-लड़ाते रहते हैं। प्यार, ममता तो परमपिता परमेश्वर की देन है। मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षियों में भी यह वृत्ति देखने में आती है। यहाँ तक कि भयंकर हिंसक जीव जन्तु भी अपने बच्चों से प्रेम करते हैं। संतान के प्रति माता-पिता का प्यार एक अत्यन्त स्वाभाविक बात है क्योंकि संतान माता-पिता के अंग-अंग का निचोड़ होती है। आचार्य यास्क लिखते हैं :-

अंगादंगात्संभवसि हृदयादधिजायसे।
आत्मा वै पुत्र नामासि स जीव शरदः शतम्।।

(निरुक्त ३/४)

यदि सन्तान के प्रति इतना प्यार, इतनी ममता न हो तो सम्भवतः पुत्र और माता-पिता के बीच इतना गहरा व अटूट सम्बन्ध बन ही न पाये।

लेकिन प्रायः देखने में आता है कि सन्तान के प्रति माता-पिता का प्यार कई बार सीमा का अतिक्रमण कर जाता है और वे बच्चों की त्रुटियों को अनदेखा कर जाते हैं जिससे बच्चों का कोमल मस्तिष्क उन त्रुटियों का भण्डार बनता जाता है। उनके स्वभाव में दोष आने लगते हैं और परिपक्व होने पर वही बच्चे माता-पिता के लिये सिरदर्द बन जाते हैं। कई माता-पिता और परिवार के अन्य लोग स्वयं ही उन्हें कुछ ऐसी बातें बचपन में सिखाते हैं जो उनके कोमल मन पर बुरा प्रभाव डालती है। हमने कितने ही माता-पिता ऐसे देखे हैं जो अपने बच्चों को कहते हैं कि अमुक व्यक्ति को आंख मार दो, उसे 'फ्लाईंग किस' कर दो, इसे धमका दो, उसे 'हप' कर दो। कई बार-बार बच्चे से कहते हैं-बताओ राजा बेटा किससे शादी करेगा? राजा बेटा किससे प्यार करता है? इत्यादि-इत्यादि। छोटे मासूम बच्चों को इन बातों का कोई पता नहीं होता, परन्तु बार-बार एक ही प्रकार की बातें दोहराने से उनका कोमल मस्तिष्क प्रभावित अवश्य होता है। पहले-पहले तो माता-पिता को उनकी भोली बातें अच्छी लगती हैं, उनके लिये बच्चों की चेष्टायें मनोविनोद का विषय होती हैं, फिर धीरे-धीरे बच्चों में ये बातें एक दोष के रूप में पनपने लगती हैं। फिर वे शिकायत करते हैं कि बच्चे हमारा कहना नहीं मानते।

महर्षि दयानन्द जी महाराज अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में द्वितीय समुल्लास में लिखते हैं -'बालकों को माता सदा उत्तम शिक्षा करे, जिससे संतान सभ्य और किसी अंग से कुचेष्टा न करने पावे। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या, द्वेषादि न करें।'

माता-पिता प्रारम्भ से यह ध्यान रखें कि बच्चा कहीं कोई दोषयुक्त बात तो नहीं सीख रहा? या वे स्वयं तो कोई ऐसी बात नहीं सिखा रहे हैं जो उसके व्यवहार एवं चरित्र को बिगाड़ने वाली है। बच्चों से प्रेम कीजिये अवश्य, लेकिन केवल अंधा प्रेम नहीं। उन्हें अच्छी आदतें सिखाकर योग्य अर्थात् सभ्य, नम्र तथा सुशील बनाना भी तो एक महान् कर्त्तव्य है।

बच्चों की अधिक लाड़ना करके तथा उनके दोषों को अनदेखा करके मोहवश उन्हें न डांटना, फटकारना उन्हें अनुशासनहीन व दुष्टवृत्ति वाला बना देते हैं, इसके भयंकर परिणाम जहां माता-पिता व परिवार को भोगने पड़ते हैं, वहीं कई बार समाज व राष्ट्र के लिए भी घातक सिद्ध होते हैं। इसके लिए बच्चे प्रायः इतने दोषी नहीं हैं जितने कि माता-पिता। इसलिये प्यार के साथ-साथ यह भी अति आवश्यक है कि बच्चों के दुष्ट आचरणों पर भी कड़ी दृष्टि रखी जाये और जैसे ही कोई त्रुटि बच्चों की देखें उसे तुरन्त रोकें और प्यार से उसे समझायें। यदि प्यार से वे न

मानें, जिद करें तो उनकी ताड़ना भी अवश्य करें। यदि आवश्यक हो तो उन्हें उचित दण्ड भी देवें। द्वितीय समुल्लास में ही ऋषिवर व्याकरण महाभाष्य का प्रमाण देकर फिर लिखते हैं–

सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।
लालनाश्रयिणो दोषास्ताड़नाश्रयिणो गुणाः।।

अर्थात् जो माता–पिता और आचार्य सन्तान और शिष्यों का ताड़न करते हैं वे जानो अपने संतान और शिष्यों को अपने हाथ से अमृत पिला रहे हैं; और जो संतानों और शिष्यों का लाड़न करते हैं वे अपने संतानों और शिष्यों को मानो विष पिला के नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं। क्योंकि लाड़न से संतान और शिष्य दोषयुक्त तथा ताड़ना से गुणयुक्त होते हैं, परन्तु माता–पिता और अध्यापक लोग ईर्ष्या, द्वेष से ताड़न न करें किन्तु ऊपर से भयप्रदान और भीतर से कृपादृष्टि रखें।[1]

संभव है कि आज कुछ पढ़े–लिखे तथाकथित प्रगतिशील लोग ऊपर की बातों से सहमत न हों परन्तु उनकी समझ में ये बातें उस समय आती हैं जब पानी सिर से गुजर चुका होता है। हमारे पड़ोस में ही एक व्यक्ति रहता था। उनका एक ही लड़का था, जिसे वे बहुत प्यार से रखते थे। अधिक प्यार के कारण वह कुछ ज्यादा ही सिर चढ़ा हो गया। कोई यदि उसे कुछ कह देता तो तुरन्त उसके घर लड़ने पहुंच जाते थे। इससे उसके हौंसले और बढ़ जाते थे। एक दिन सायंकाल को उनके घर से ऊंची–ऊंची आवाजें आनी शुरू हो गई। कुछ उठा–पटक होने लगी तो मैं दौड़कर उनके घर गया। जो दृश्य वहाँ पर देखा वह चौंकाने वाला था। पुत्र ने पिता को धरती पर गिरा रखा था और उसे दबोच कर उसकी पिटाई कर रहा था। बड़ी मुश्किल से उसे छुड़वाया और लड़के को भी धमकाया कि मूर्ख! यह क्या कर रहा है।

जो माता–पिता आवश्यकता से अधिक मोह दिखाकर बच्चों की हर उचित अनुचित मांग पूरी करते रहते हैं उनकी संतानें बड़ी होकर उनके लिए कष्टदायी बन जाती हैं। बच्चा क्या भाषा बोल रहा है, कैसा व्यवहार कर रहा है, इस पर अभिभावकों को कड़ी दृष्टि रखनी चाहिए। जब वह देखता है कि जो कुछ उसने कह दिया उसकी वही बात पूरी हो जाती है तो उसमें जिद की भावना जन्म ले लेती है। यदि माता–पिता ना नुकर करते हैं तो वह रोता है, हाथ–पांव पटकता है तो माता–पिता का दिल पसीज जाता है। बस उसे पता चल जाता है कि अपनी मांग मनवाने का यह उत्तम ढंग है। हमने कितने ही परिवारों में देखा है कि बच्चे की यदि कोई मांग पूरी नहीं होती या उसे थोड़ा सा डांट दिया तो वह असभ्यता से बोलने लगता है। कई बच्चे तो स्वयं कमरे में जाकर अन्दर से कुण्डी लगा लेते हैं। माता–पिता अनुनय–विनय करते रहते हैं। उन्हें माता–पिता की कमजोरी का पता चल जाता है। वे और अधिक नकचढ़े हो जाते हैं। ऐसे अभिभावकों को जब कोई सुझाव देता है, बच्चों को नियंत्रण में रखने की बात कहता है तो उनका उत्तर होता है–अजी कुछ बड़ी बात नहीं है, बच्चा है, बड़ा होकर स्वयं समझ जायेगा। याद रखिये बड़े होकर वे स्वयं नहीं समझेंगे, वे तो माता–पिता को समझायेंगे। जो माता–पिता पांच सात वर्ष के बालक को नहीं संभाल सकते क्या वे बीस–पच्चीस वर्ष के युवक को नियंत्रण में रख पायेंगे? कदापि नहीं।

आज का युग भौतिक चकाचौंध का युग है। आज लोगों की मान्यता यही बन गई है कि यदि हमारे पास धन है तो सब कुछ है और यदि धन नहीं है तो जीवन बेकार है। बहुत सारे पति–पत्नी ऐसे हैं जो दोनों ही नौकरी करते हैं। ऐसे में बच्चे या तो घर में सारा दिन अकेले रहते हैं या फिर नौकरों के भरोसे। माता–पिता तो दोनों सुबह काम पर निकल जाते हैं जो सायंकाल ही आ पाते हैं। पीछे से बच्चों ने क्या किया। टी०वी० देखा या आपस में लड़ाई झगड़ा किया या उछल–कूद मचाई, इसके लिये माता–पिता के पास समय कहाँ। बस अधिक से अधिक धन कमाकर यह समझ लेना कि हमने बच्चों के लिये सब कुछ कर दिया। इन्हें खूब पैसे देते हैं, इतने से ही सब कार्य नहीं होते। उन्हें माता–पिता का मार्गदर्शन कदम–कदम पर चाहिये। अपनी हर समस्या, हर उलझन में उनकी भागीदारी चाहिये। हम नीचे कुछ विचार–बिन्दु दे रहे हैं, उन पर चिन्तन कीजिये और अच्छा लगे तो उन्हें व्यवहार में भी लाईये :–

१– बच्चों को प्यार कीजिये, परन्तु सिर मत चढ़ाईये। जैसे ही वह गलती करे, अपशाब्द बोले या असभ्यता करे उसे तुरन्त रोकिये। पहले प्यार से समझाईये यदि न माने तो दण्ड दीजिये। आवश्यक हो तो थोड़ी देर के लिए बोलना भी बंद कर दें।

२– उन्हें आवश्यकता से अधिक खाने–पीने की या बाजार की वस्तुएँ मत दिलवाईये। ऐसी वस्तुएँ जहाँ उनकी आदतें बिगाड़ती हैं, वहीं उनके स्वास्थ्य को भी बिगाड़ती हैं।

३– बच्चों को व्यर्थ में पैसे देने की आदतें मत डालिये। जिस कार्य के लिये वे पैसे मांग रहे हैं, वह कार्य यदि उचित हो तो स्वयं कर दीजिये।

४– कभी भूलकर भी उन्हें स्वयं अपशाब्द न सिखाईये– आंख मार दो, फ्लाईंग किस कर दो; इत्यादि बातें यदि

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

निष्काम कर्म

❑**स्वामी श्रद्धानन्द जी**, संस्थापक गुरुकुल कांगड़ी

यज्ञ दान तपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।।
एतान्यपि तु कर्माणि संग त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति मे पार्थ! निश्चितं मतमुत्तमम्।।–गीता १८/ ५, ६

शब्दार्थ–(यज्ञ दान तपः) मनुष्य के लिये यज्ञ, दान और तप (कर्म) यह तीन कर्तव्य हैं। (न त्याज्यम्) यह कर्त्तव्य मनुष्य कभी न छोड़े, (कार्यमेव तत्) इन्हें अवश्य करता ही रहे, क्योंकि (यज्ञो दानं तपश्चैव) यज्ञ, दान और तप यह तीनों (मनीषिणाम्) बुद्धिमान् मनुष्यों के (पावनानि) हृदयों को शुद्ध पवित्र करने वाले हैं। अतएव (पार्थ!) हे अर्जुन! (एतान्यपि तु कर्माणि) यह सब कर्म (संग फलानि च त्यक्त्वा) आसक्ति तथा फल त्याग की भावना से (कर्त्तव्यानि) करने चाहिएँ, यह (उत्तमं मतं निश्चितम्) मेरा उत्तम तथा निश्चित मत है।

उपदेशामृत

कर्मों के नाश से मुक्ति होती है। जब तक कर्म का बन्धन नहीं छूटता तब तक मनुष्य शरीर रूपी कारागार में बंद रहता है, इसलिये मुक्ति की इच्छा रखने वालों के लिए आवश्यक है कि वह कर्मों का अन्त कर दें। क्या इसका अभिप्राय यह है कि कर्म करे ही नहीं, मैंने एक बार एक दृश्य देखा जो कभी भूलता नहीं। एक साधु महात्मा मेरे स्थान के समीप आकर ठहरे। उनका नाम ही जनता ने 'निष्काम' रख लिया था। वह नग्न रहते थे। मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी, दर्शनों के लिए उपस्थित हुआ। न बोलते थे, न कुछ करते थे। कुएं पर चौकड़ी मारे बैठे थे। उनके स्थूल शरीर को चार आदमी मल-मल कर धो रहे थे। उन्हीं में से एक भक्त ने बदन अंगोछ दिया, उठाया- उठ खड़े हुए, हिलाया- हिल पड़े। और गद्दी पर पहुँचते ही बैठ गये। मैं भी प्रणाम करके बैठ गया। गले में सुगन्धित फूलों की माला डाली गई। साधु जी ने मौन साधन किया हुआ था और भक्तजन प्रशंसा के पुल बांध रहे थे। इतने में एक देवी आई और उसने मुँह के पास कलाकंद (मिठाई) रखी। महात्मा जी ने मुँह खोल दिया। जब कलाकंद मुँह के अंदर गया तो खाने लग गये। तब मुझसे न रहा गया और मैंने कहा- 'महात्मा जी! अगर आप मुँह न खोलते और मिठाई को दांतों से न चबाते, तब मैं इन मनुष्यों के कहने पर आपको 'निष्काम' समझता।' महात्मा जी की आंखें सुरख लाल हो गईं और मौन व्रत टूट गया। मैं बाहर चला आया।

लोगों ने आकर मुझसे कहा- यह साधु सदाचारी तो है? मैंने जवाब दिया कि यदि सदाचारी है तो यह इसका

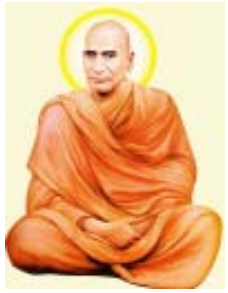

कर्तव्य है। परन्तु जो मनुष्य क्रोध को वश में नहीं कर सकता, उससे हमें क्या लाभ हो सकता है? जैसे कि कहा गया था, संभव है कि वह साधु सदाचारी हो। परन्तु फिर वह क्यों क्रोध में आया? इसलिये कि उसने 'निष्काम' शब्द के अर्थ नहीं समझे। कर्म कौन मनुष्य छोड़ सकता है? क्या आँख से देखना बंद हो सकता है? कान को सुनने से रोका जा सकता है? कोई भी इन्द्रिय अपने काम को नहीं छोड़ती। तब क्या करना चाहिए?

कृष्ण भगवान् कहते हैं- यज्ञ, दान और तप इन कर्मों का कभी भी त्याग न करना चाहिए। छोड़ने योग्य बुरे काम हैं, न कि अच्छे। वैदिक कर्म को न छोड़ें परन्तु इन कर्मों को नियमपूर्वक करना मनुष्य का परम धर्म है। यह क्यों? इसलिये कि मनुष्य एक स्थान पर ठहर नहीं सकता। गति- जगत् का नियम है। सिवाय परमात्मा के और किसी सांसारिक पदार्थ की स्थिति नहीं, फिर निर्बल मनुष्य कब एक स्थान पर ठहर सकता है? मुक्ति बड़ी दूर है। आत्मिक हिमालय की चोटी पर उसकी झलक सी दिखती है। मुक्ति के अभिलाषियों को ऊपर चलना है। मार्ग बड़ा विकट है, चढ़ाई सीधी है। अगर दृढ़ता के साथ श्वास को ठीक कर, बदन को ठीक अवस्था में रखकर ऊपर को नहीं चलते तो एक दम नीचे गिर पड़ोगे। नीचे की दूरी से सिर में चक्कर आ जाये और न जाने किस प्रकार नीचे आन गिरें। इसलिये

कृष्ण देव कहते हैं कि आत्मा की शुद्धि और दृढ़ता के लिए, यज्ञ, दान और तप का अभ्यास नित्य करें।

बिना तप के मनुष्य दान के योग्य नहीं होता। जिसके पास स्वयं धन नहीं, वह दूसरों को क्या देगा? जिसके अपने पास विद्यारूपी रत्न नहीं, वह दूसरों को विद्या दान कैसे कर सकता है? इसलिये तप का अभ्यास सबसे पहले करना चाहिए, उसके साथ दान का अभ्यास स्वयमेव होगा। जिसके शरीर में बल नहीं, वह दीनों की रक्षा क्या करेगा? जब तप और दान इकट्ठे हो जाते हैं तब यज्ञ का प्रकाश होता है।

क्या कभी इस तरह कर्मों का अन्त हो सकेगा? यदि कर्मों का अन्त न होगा तो क्या कभी भी हम मुक्ति की चोटी पर पहुँच सकेंगे? इसका उत्तर फिर ईश्वरीय विज्ञान (वेद) की सहायता से भगवान् कृष्ण देते हैं–कर्म बराबर करो, क्योंकि इन्द्रियाँ बिना कर्मों के रह नहीं सकतीं किन्तु उन कर्मों के फल भोग की इच्छा को छोड़ दो। बस यही निष्काम कर्म कहलाते हैं। कर्म करते हुए ही पूरी आयु भोगने की इच्छा करो परन्तु उन कर्मों के फल से कुछ भी सम्बन्ध न रखो। इस तरह कर्मों के बन्धन से छूट सकते हो।

कर्म अपने आप में कुछ भी नहीं कर सकते, उनमें फंसावट ही सब कुछ करती है। मनुष्यों को यदि पापरूपी नरक में गिराती है तो कर्मों की फंसावट! इसलिये ऐ! मेरे प्यारे भाईयों! संसार के गृहस्थरूपी युद्ध से मत भागो। जिसने इन्द्रियों को वश में किया है, उसका घर भी तपोवन है, किन्तु जो वन में जाकर भी इन्द्रियों का दास ही रहा, वह घोर संसार में फंसा हुआ है।

ब्राह्मण निष्काम कर्म करने से ही जगद्गुरु कहलाते थे अन्यथा उनके शरीर भी दूसरे मनुष्यों की तरह के ही थे। इस समय निष्काम भाव से काम करने की बड़ी भारी आवश्यकता है। मैं भूल गया। इस समय क्या, हर समय ही निष्काम भाव से काम करने की आवश्यकता है। तुम यश के भूखे हो! निष्काम भाव से काम करो, यश तुम्हारे पीछे मारा–मारा फिरेगा! तुम्हें आश्चर्य होगा कि यश का निष्काम भाव से क्या सम्बन्ध? परन्तु आश्चर्य की कोई बात नहीं है। कवि ने सच कहा है–

'बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख'

तुम अपना उद्देश्य उच्च बनाओ, उसके लिये तप, दान और यज्ञ के अभ्यास की आवश्यकता है। इन तीनों प्रकार के कर्मों से शरीर, मन और आत्मा को शुद्ध करो। फिर निडर होकर संसार में विचरो। जब फल भोग की कामना न रही तो बजाय इसके कि विषय इन्द्रियों को अपनी तरफ खींच सकें और बजाय इसके कि मन आत्मा को बहिर्मुख कर सके, आत्मा अपने अन्दर मन और इन्द्रियों को खींच कर उनका राजा बना हुआ परम धाम की तरफ चल सकेगा। उस परम धाम का मालिक परम आत्मा है। उसी का सारा ऐश्वर्य है। उसको पाकर फिर किसी वस्तु की इच्छा बाकी नहीं रहती।

परमात्मा पूर्ण कृपा करें कि हम सब योगीराज कृष्ण के गंभीर नाद को सुनें और उसके अनुकूल चलें।

अंधकार से प्रकाश

अंधकार और प्रकाश मानव जीवन के दो पहलू हैं। बाहर के जीवन में भी और अन्दर के जीवन में भी! परमात्मा ने प्रकृति के माध्यम से दिन और रात के रूप में प्राणियों के लिए प्रकाश और अंधकार की चिरन्तन व्यवस्था की है। प्रत्येक प्राणी को अंधकार की भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि प्रकाश की। अन्यथा परमात्मा यह व्यवस्था क्यों करता! यदि प्रकाश न हो तो हमारी नेत्रेन्द्रिय किस काम की? और यह सारा दृश्यमान जगत्–– प्रकाश के न होने की स्थिति में होना न होना बराबर है।

सूर्य का और नेत्रेन्द्रिय का और प्रकाश का कैसा बुद्धिमत्तापूर्ण संगतिकरण है! यह व्यवस्था अपौरुषेय है। मनुष्य ही नहीं, प्रत्येक प्राणी को प्रकाश का पुरुषार्थ ही नहीं, अंधकार की विश्रान्ति भी चाहिये। जो कुछ उसने प्रकाश में पाया उसको सहेजने समेटने के लिए उसे रुकना पड़ेगा और प्राप्त का विश्लेषण करना होगा। रात की विश्रान्ति उसे दिन में प्राप्त किये हुए का प्रयोग करने की ऊर्जा प्रदान करती है।

पर यह समझ लेना चाहिये कि अंधकार का महत्त्व तभी है जब जीवन में आलोक हो। यदि विवेक का आलोक न हो तो यह अंधकार की विश्रान्ति उसके लिये केवल पतन की खाई ही है।

आज बुद्धिमान प्राणी मनुष्य के साथ यह सबसे बड़ी विडम्बना है कि वह प्राप्त तो कर रहा है पर उस प्राप्त किये हुए का प्रयोग करना नहीं जान पाया। तृप्ति और संतुष्टि इस बात पर निर्भर नहीं करती कि उसने कितना उपभोग किया, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि उसने कैसे उपयोग किया। यदि मात्रा पर संतुष्टि निर्भर होती तो आज विश्व के धनी व्यक्ति कमाना छोड़ चुके होते और एक समय अल्पाहार करने वाले योगीजन सबसे ज्यादा असंतुष्ट होते। ❐❐❐

छोटी-छोटी पर मोटी बातें

❑प्रो० शामलाल कौशल ९७५-बी/२० ग्रीन रोड, रोहतक-१२४००१

ये बातें छोटी-छोटी जरूर लगती हैं, लेकिन यदि इन पर अमल किया जाये तो जीवन की बहुत सी समस्याओं का सहज ही समाधान हो सकता है।

छोटे तथा बड़े होने का विवाद तो तब से चल रहा है, जब से ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना की है। बड़ा तो बड़ा ही होता है। इसलिये दुनिया में बड़े का अपना ही स्थान है। लेकिन इसका मतलब यह कतई नहीं कि छोटे की दुनिया में कोई अहमियत नहीं। हो सकता है 'बात पते की पागल भी कह जाये', 'दुनिया ना माने' वाली बात छोटे के बारे में कही तो जा सकती है, लेकिन कीड़ी को देखिये साहब! हाथी को मार देने की ताकत रखती है। दिया हुआ थोड़ा दान न जाने कितना बड़ा काम कर जाये। बूंद बूंद से सागर भर जाता है।

थोड़ी थोड़ी बचत न जाने हमें किस बड़े संकट से बचा दे। लाल बहादुर शास्त्री जैसे छोटे कद के प्रधानमंत्री ने १९६५ में जिस तरह पाकिस्तान के नाकों चने चबवा दिये थे, वह किससे भूला है। और घर में पैदा हुआ शिशु किस तरह खुशियां बिखेर कर माहौल को खुशगवार बना देता है, हम सब जानते हैं। छोटा सा दीपक जिस प्रकार अंधेरे को दूर कर देता है, वह तो हैरानी की बात है ही। इसी लिये एक फिल्म में एक बच्चे ने गाना गाते हुए हमें बताया है- 'छोटा बच्चा जान के ना कोई आंख दिखाना रे'। हमें कभी भी छोटे को छोटा समझकर उसकी अवहेलना नहीं करनी चाहिये। उम्र में सबसे छोटे अभिमन्यु के पराक्रम को हम अच्छी तरह समझते हैं।

✍अगर खुश तथा सुखी रहना हो तो कोई मुसीबत या कठिनाई आने पर हिम्मत न हारें। धैर्य रखें, संयम बरतें। इसके निपटारे के लिये अपने किसी बुजुर्ग या अनुभवी शुभचिंतक से सलाह लें या फिर उसकी मदद लें जो इस प्रकार की मुसीबत से गुजर कर सफल हो चुका हो। परमात्मा पर भरोसा रखें तथा कोशिश करें। सब ठीक हो जायेगा। वक्त बहुत बड़ा डॉक्टर है, सब ठीक कर देता है। अगर फिर भी कोई उपचार न हो तो कोई बात नहीं। हँसते हँसते स्थिति को परमात्मा की मर्जी मानकर स्वीकार करें।

✍अगर जिंदगी में कभी कोई गलती या कसूर हो जाये तो अपनी भूल का पश्चात्ताप करें और भूल सुधारने की कोशिश करें; लेकिन भविष्य में इस प्रकार की भूल फिर न दोहराने का भी दृढ़ निश्चय करें।

✍आपकी गलती से अगर किसी को चोट लगी हो या दुःख हुआ हो, उससे क्षमा याचना करके अपने पाप तथा मन के बोझ को कम करें। इसी तरह अगर आपको कोई जाने या अनजाने से चोट पहुंचाये, बुराई करे तो Forgive and Forget की नीति अपनाईये। किसी के प्रति निरंतर ईर्ष्या, क्रोध या वैर भावना से दूसरे का नुकसान हो या न हो लेकिन आपकी मन की शांति में जरूर विघ्न पहुंचेगा। आप चैन से कुछ भी नहीं कर सकेंगे। इसलिए दूसरे का बड़े से बड़ा अपराध भूल जाओ और माफ करो। उसका न्याय परमात्मा पर छोड़ दो। (योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।) सुख की नींद तभी सो सकोगे।

✍अपने माता, पिता, अध्यापकों तथा गुरुओं के प्रति श्रद्धा-भावना तथा सम्मान होना चाहिये। इनकी सेवा करके आशीर्वाद लेने चाहियें। ज्ञान में वृद्धि होती है, मन में शान्ति मिलती है तथा अच्छे संस्कारों को बढ़ावा मिलता है।

✍अगर हम अपने माता-पिता का कहना मानेंगे, सेवा करेंगे, तभी हमारे बच्चे अच्छे संस्कार सीख सकेंगे।

✍बच्चों को ईमानदारी तथा परिश्रम की कमाई का ही खाना खिलायें। बेईमानी के पैसे से उनकी शिक्षा, दीक्षा, लालन-पालन करने से बच्चों की मानसिकता तथा व्यवहार पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

✍माता-पिता को चाहिये कि वे अपने बच्चों को 'अपने' माता-पिता के साथ मिलने जुलने तथा खेलने दें। उन्हें अपने दादा, परदादा तथा अन्य रिश्तेदारों से मिलवाते रहें तथा उनके प्रति सम्मान की भावना जाग्रत करें।

✍हमें चाहिये कि हम न केवल अपने अमीर रिश्तेदारों तथा अन्य मित्रों से सम्बन्ध बनाये रखें बल्कि अपने गरीब रिश्तेदारों, मित्रों तथा परिचितों को मान सम्मान दें। याद रखें मुसीबत आने पर जितनी ईमानदारी तथा समर्पण भावना से हमारी मदद तथा सेवा हमारे गरीब रिश्तेदार तथा मित्र करेंगे उतनी अमीर आदमी नहीं करेंगे।

✍जब कोई दूसरा बोल रहा हो, अपनी बात समाप्त करके जब वह चुप हो जाये, हमें तभी बोलना चाहिये, बीच में टोका-टाकी ठीक नहीं होती।

✍जब घर में कोई अतिथि आये तो उसे उचित सम्मान दें,

उसे घर में उचित स्थान पर बिठाकर फिर उसके साथ आप बैठें। घर आये व्यक्ति का कभी भी निरादर न करें। जहाँ तक हो सके 'अतिथि देवो भव' की बात पर अमल करें।

✍अगर परमात्मा मेहरबान होकर बहुत सारा धन-दौलत दे दे तो हमें अहंकार नहीं करना चाहिये तथा परमात्मा का धन्यवाद करना चाहिये।

✍अगर जिंदगी के बुरे दिन होने के कारण हमें अभाव की स्थिति का सामना करना पड़ रहा हो तो समय, सब्र तथा परमात्मा द्वारा अच्छे दिन दिये जाने की इंतजार करनी चाहिये। हमें बुजुर्ग कहा भी करते थे 'सब दिन होत न एक समान'। फिर घबराना किस बात से!

✍जब आप बहुत खुश हों तो किसी से कोई वादा न करें। कई बार जोश में आकर हम वादा तो कर बैठते हैं, लेकिन फिर हम उसे भूल जाते हैं।

✍जब कभी आपको क्रोध आये, आप कोई निर्णय न लें, आमतौर पर क्रोध में लिया हुआ निर्णय गलत होता है।

✍ लालच न करें। लालच को संतोष से जीतें।

✍किसी पर विश्वास तो करें लेकिन अंधविश्वास न करें।

✍अपनी आमदनी के मुताबिक खर्च करें। मुसीबत के दिनों के लिये कुछ बचत जरूर करें।

✍ईश्वर तथा मौत को सदा याद रखते हुए बुरे कार्यों से बचें। घर के किसी कोने में ईश्वर उपासना का स्थान अवश्य निश्चित करें। दोनों समय ईश्वर का भजन करें।

✍संध्या के समय कुछ न खायें, तब पति-पत्नी भूलकर भी समागम न करें।

✍आज की परिस्थितियों के मुताबिक ही नहीं, कल का भी सोचकर जीयें।

✍चिंता न करें, परमात्मा का चिंतन करें।

✍मन पर कंट्रोल रखें। कभी-२ अनशन/उपवास भी रखें, शरीर ठीक रहेगा।

✍घर में एक ही चौधरी होना चाहिए, अगर सभी लोग चौधरी बनेंगे तो घर नहीं चलेगा।

✍तनाव की स्थिति होने पर लम्बे सांस लें तथा पानी पियें।

दिखने में ये बातें छोटी-छोटी जरूर लगती हैं, लेकिन यदि इन पर अमल किया जाये तो जीवन की बहुत सी समस्याओं का सहज ही समाधान हो सकता है।

पतन की पराकाष्ठा

कुलदीप आर्य, बाढड़ा, भिवानी

मर्यादापुरुषोत्तम श्रीराम, योगीश्वर श्रीकृष्ण, हनुमान् परशुराम, महर्षि दयानन्द आदि महापुरुषों ने भारतीय संस्कृति को विश्व के सिर माथे स्थापित किया था। लंकापति रावण ने एक सीता का अपहरण किया था। भारत के वीरों ने उसका नामोनिशान मिटा दिया। परन्तु आज की सीताओं का अपहरण तथा साथ में बलात्कार व हत्याएँ लंका में नहीं, भारत में और हमारे ही घरों में पैदा हुए रावणों द्वारा की जा रही हैं। छेड़छाड़, अपहरण, बलात्कार, हत्याएँ, गुण्डागर्दी व लड़कियों के भागने की खबरों से अखबार भरे रहते हैं। शिक्षण संस्थाओं में शोषण, चाचा, मामा और भाइयों द्वारा सामूहिक बलात्कार, बहन भाई का रिश्ता कलंकित, बाप ने बेटी से मुँह काला किया आदि समाचार किसको शर्मशार नहीं करते? सारे विश्व को चरित्र की शिक्षा देने वाले तथा दूसरे की बहन बेटी को अपनी बहन बेटी और दूसरे की पत्नी को माता और बहन की दृष्टि से देखने वालों का इतना पतन क्यों हुआ? क्यों हो रहा है? क्या समाधान है? यह सोचने को किसी के पास समय नहीं है। क्या इस गन्दगी का कारण पाश्चात्य संस्कृति नहीं है? फिल्में आज अश्लीलता से भरी हैं। टी० वी० में समाचारों को भी सभ्य परिवार के लोग इकट्ठा बैठकर नहीं देख सकते। अभिनेता और अभिनेत्री पैसे और प्रसिद्धि के लालच में अश्लीलता परोसते हैं। आज की अभिनेत्रियाँ सरेआम कहती हैं- 'अगर मेरे रोल की मांग हुई तो मुझे कपड़े उतारने में परहेज नहीं।'

बच्चे और युवक युवतियाँ जैसा देखते हैं, वैसा ही करते हैं। यही कारण है कि आज वे अभिनेता और अभिनेत्रियों वाला फैशन करते हैं। घरों में नग्न चित्र और फिल्मी स्टाईल में छेड़छाड़ को शान समझते हैं। युवतियाँ कामुकता को भड़काने वाले पारदर्शी या कम से कम कपड़े पहन रही हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर गंदगी का प्रदर्शन किया जाता है।

क्या ऐसे में हमारे युवा भरत और शिवाजी का चरित्र सीख पाएँगे? क्या पूरे परिवार के साथ फिल्मी लम्पटों को देखकर युवतियाँ लक्ष्मीबाई, पद्मिनी, कृष्णाकुमारी और हाड़ा रानी का गौरव जान पाएँगी? विश्व की श्रेष्ठतम परम पावन अमर भारतीय संस्कृति को छोड़कर कलुषित पाश्चात्य संस्कृति की झूठन चाटने वालो! जब बहन भाई से और बेटी बाप से सुरक्षित नहीं है, इससे अधिक और कितना पतन चाहते हो? यदि इसी बेशर्मी का नाम आधुनिकता है तो धिक्कार है ऐसी आधुनिकता को! माँ को देवता कहने वालो! मातृभूमि की इज्जत बचाओ। पिता को देवता मानने वालो! बुजुर्गों को समाज में मुंह दिखाने लायक छोड़ दो। दानवता फैलाने वाली पाश्चात्य संस्कृति का विरोध करो। मानव बनाने वाली भारतीय संस्कृति की रक्षा करो। भारत बचेगा विश्व बचेगा।

बलिदान दिवस

महान गौरक्षक : हरफूल सिंह जाट जुलानी

प्रस्तुति : **जयदीप सिंह नैन**

वीर हरफूल उस समय चलती फिरती कोर्ट के नाम से भी मशहूर थे। जहाँ भी गरीब या औरत के साथ अन्याय होता था वे वहीं उसे न्याय दिलाने पहुंच जाते थे। उनके न्याय के भी बहुत से किस्से प्रचलित हैं।

जन्म

वीर हरफूल का जन्म १८९२ ई० में भिवानी जिले के लोहारू तहसील के गांव बारवास में एक जाट क्षत्रिय परिवार में हुआ था। उनके पिता एक किसान थे। बारवास गांव के इन्द्रायण पाने में उनके पिता चौधरी चतरू राम रहते थे। उनके दादा का नाम चौधरी किताराम था। १८९९ में हरफूल के पिताजी की प्लेग के कारण मृत्यु हो गयी। इसी बीच उनका परिवार जुलानी (जींद) गांव में आ गया। यहीं के नाम से उन्हें वीर हरफूल जाट जुलानी वाला कहा जाता है।

हरफूल की माता जी को उनके देवर रत्ना का लत्ता उढा दिया गया। हरफूल अपने मामा के यहां तोशाम के पास संडवा (भिवानी) गांव में चले गये। जब वे वापिस आये तो उनके चाचा के लड़कों ने उसे जमीन में हिस्सा देने से मना कर दिया, जिस पर बहुत झगड़ा हुआ और हरफूल को झूठी गवाही देकर पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। हरफूल पर थानेदार ने बहुत अत्याचार किये। उनकी माता ने हरफूल का पक्ष लिया मगर उनकी एक न चली। बाद में उनकी देखभाल भी बन्द हो गयी।

सेना में १० साल

उसके बाद हरफूल सेना में भर्ती हो गए। उन्होंने १० साल सेना में काम किया। उन्होंने प्रथम विश्वयुद्ध में भी भाग लिया। उस दौरान ब्रिटिश आर्मी के किसी अफसर के बच्चों व औरत को घेर लिया गया। तब हरफूल ने बड़ी वीरता दिखलाई व बच्चों की रक्षा की। अकेले ही दुश्मनों को मार भगाया।

फिर हरफूल ने सेना छोड़ दी। जब सेना छोड़ी तब उस अफसर ने उन्हें कुछ ईनाम मांगने को कहा। उन्होंने फोल्डिंग गन मांगी। वह बंदूक अफसर ने उन्हें दे दी।

थानेदार व परिवार से बदला–

हरफूल ने सबसे पहले आते ही टोहाना के उस थानेदार को ठोक दिया जिसने उसे झूठे आरोप में पकड़ा व टार्चर किया था। फिर उसने अपने परिवार से जमीन में हिस्सा मांगा तो चौधरी कुरड़ाराम के अलावा किसी ने समर्थन नहीं किया और भला बुरा कहा। वे उनकी माता की मृत्यु के भी जिम्मेदार थे। उनको हरफूल ने मौत के घाट उतार दिया। इसके बाद हरफूल बागी हो गया। उसने अपना शेष जीवन गौरक्षा व गरीबों की सहायता में बिताया।

गौरक्षा–सवा शेर

पहला हत्था तोड़ने का किस्सा –२३ जुलाई १९३०। टोहाना में मुस्लिम राँघड़ों का गाय काटने का एक कसाई खाना था। वहाँ की ५२ गांवों की नैन खाप ने इसका कई बार विरोध किया। कई बार हमला भी किया जिसमें नैन खाप के कई नौजवान शहीद हुए व कुछ कसाई भी मारे गए, लेकिन सफलता हासिल नहीं हुई, क्योंकि ब्रिटिश सरकार मुस्लिमों के साथ थी। खाप के पास हथियार भी नहीं थे। नैन खाप ने वीर हरफूल को बुलाया व अपनी समस्या सुनाई। हिन्दू वीर हरफूल भी गौहत्या की बात सुनकर लाल पीले हो गए और फिर नैन खाप के लिए हथियारों का प्रबंध किया। हरफूल ने युक्ति बनाकर दिमाग से काम लिया। उन्होंने एक औरत का रूप धरकर कसाईखाने के मुस्लिम सैनिकों और कसाइयों का ध्यान बांट दिया। नौजवान अंदर घुस गए। उसके बाद हरफूल ने ऐसी तबाही मचाई कि बड़े बड़े कसाई उनके नाम से ही कांपने लगे। उन्होंने कसाइयों पर कोई रहम नहीं खाया। सैंकड़ों राँघड़ों को मौत के घाट उतार दिया और गऊओं को मुक्त

करवाया। अंग्रेजों के समय बूचड़खाना तोड़ने की यह प्रथम घटना थी। इस महान साहसिक कार्य के लिए नैन खाप ने उन्हें 'सवा शेर' की उपाधि दी व पगड़ी भेंट की।

उसके बाद तो हरफूल ने ऐसी कोई जगह नहीं छोड़ी जहां उन्हें पता चला कि कसाईखाना है, वहीं जाकर धावा बोल देते थे। उन्होंने जींद, नरवाना, गोहाना, रोहतक आदि में १७ गौहत्थे तोड़े। उनका नाम पूरे उत्तर भारत में फैल गया। कसाई उनके नाम से ही थर्राने लगे। उनके आने की खबर सुनकर ही कसाई सब छोड़कर भाग जाते थे। मुसलमान और अंग्रेजों का कसाइवाड़े का धंधा चौपट हो गया।

अंग्रेज पुलिस उनके पीछे लग गयी। मगर हरफूल कभी हाथ न आये। कोई अंग्रेजों को उनका पता बताने को तैयार नहीं हुआ।

गरीबों का मसीहा

वीर हरफूल उस समय चलती फिरती कोर्ट के नाम से भी मशहूर थे। जहाँ भी गरीब या औरत के साथ अन्याय होता था वे वहीं उसे न्याय दिलाने पहुंच जाते थे। उनके न्याय के भी बहुत से किस्से प्रचलित हैं।

गिरफ्तारी व बलिदान

अंग्रेजों ने हरफूल के ऊपर इनाम रख दिया और उन्हें पकड़ने की कवायद शुरू कर दी। इसलिए हरफूल अपनी एक ब्राह्मण धर्म बहन के पास झुंझनु (राजस्थान) के पंचेरी कलां पहुंच गए। इस ब्राह्मण बहन की शादी भी हरफूल ने ही करवाई थी। यहां का एक ठाकुर भी उनका दोस्त था। वह इनाम के लालच में आ गया व उसने अंग्रेजों के हाथों अपना जमीर बेचकर दोस्त व धर्म से गद्दारी की।

अंग्रेजों ने हरफूल को सोते हुए गिरफ्तार कर लिया। बाद में २७ जुलाई १९३६ को चुपके से पंजाब की फिरोजपुर जेल में अंग्रेजों ने उन्हें रात को फांसी दे दी। उन्होंने विद्रोह के डर से इस बात को लोगों के सामने स्पष्ट नहीं किया। उनके पार्थिव शरीर को भी हिन्दुओं को नहीं दिया गया। उनका शरीर सतलुज नदी में बहा दिया गया।

इस तरह देश के महान् गौरक्षक, गरीबों के मसीहा, उत्तर भारत के रॉबिन हुड कहे जाने वाले वीर हरफूल सिंह ने अपना सर्वस्व गौमाता की सेवा में कुर्बान कर दिया। मगर कितने शर्म की बात है कि बहुत कम लोग आज उनके बारे में जानते हैं। कई गौरक्षक संगठन भी उनको याद नहीं करते। गौशालाओं में भी गौमाता के इस लाल का कोई स्मृति चिह्न नहीं है।

ऐसे महान गौरक्षक को मैं शत शत नमन करता हूँ।

(साभार फेसबुक)

गाय मात्र एक जानवर नहीं है

गाय मात्र एक जानवर नहीं है? गाय एक संस्कृति है, गाय एक वैद्यशाला है व हिंदू ही नहीं सम्पूर्ण मानव जाति की पोषक है। गाय की महिमा पौराणिक व वैदिक ग्रंथों में बड़े विस्तारपूर्वक वर्णित है। गाय भारतवर्ष के लिए तो एक वरदान है। प्राचीनकाल से भारतवर्ष को गाय समृद्धिशाली बनाती आई है। हमारे ऋषि-मुनियों ने गाय को अपने आश्रमों में प्रमुखता से स्थान दिया।

विज्ञान ने भी गाय के महत्त्व को प्रमाणित कर दिया है। गाय का दूध, घी, मूत्र औषधीय गुणों से भरपूर हैं। भारतवर्ष की अर्थव्यवस्था में कभी गाय अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देती थी परन्तु आज किसी को गाय की चिंता नहीं है। जिस गाय को मुगल शासन के समय में भी कत्ल नहीं किया जाता था, आज उसी गाय को बीच चौराहों पर बडी निर्ममता से काटा जा रहा है। जिस धर्म में गाय को गाय नहीं, गौमाता कहा जाता है, उसी धर्म के लोगों के पास गाय और गौशालाओं के लिए एक पैसा नहीं और काल्पनिक साई बाबा आदि पर करोड़ों का चढ़ावा चढ़ा रहे हैं। कथाओं के नाम पर किट्टी पार्टियाँ कर रहे हैं, इसमें भी लाखों-करोडों खर्च कर रहे हैं, पर गाय के लिए एक धेला नहीं। वे समझते हैं कि ऐसा करने से उन्हें पुण्य प्राप्त होगा, पाप कर्म छूट जायेंगे और स्वर्ग की प्राप्ति होगी। वाह रे! भोले-भाले मूर्ख नादान लोगो! तुम्हारी बुद्धि पर तरस आता है। अभी ज्यादा कुछ नहीं बिगड़ा है, समय रहते आर्य लोग चेत जायें तो अपनी महाभूल को अभी भी सुधारा सकता है। गौपालन करके, गौशालाओं को मदद करके, देसी गाय को शंकर बनने से बचाकर, कत्लखानों से बचाकर, आवारा घूम रहीं गौओं को गौशालाओं में पहुंचा कर, गाय की विशेषताएं सम्पूर्ण जगत में प्रचार-प्रसार करके, झूठे धर्मगुरुओं पर धन न लुटाकर-सीधे गौसेवा करके। अगर हम समय रहते उपर्युक्त बातों पर अमल करें तो निश्चय ही गौमाता को बचाया जा सकता है और भारतवर्ष गौ हत्या के पाप से मुक्त भी हो सकता है।

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
गांव रिहावली, डा० तारौली,
फतेहाबाद-आगरा ,२८३१११

राह वही जो प्रभु बताये

❑पं० नरेन्द्र आहुजा विवेक, (राज्य औषधि नियन्त्रक)
६०२ जी एच ५३ सैक्टर २० पंचकूला हरियाणा

हमारा सच्चा मित्र, सखा, सहायक परमात्मा लक्ष्य की प्राप्ति में सदा हमारी सहायता करता है।

एक विवाह संस्कार में शामिल होने के लिए एक छोटी सी यात्रा पर जाना था। जिस जगह शादी होनी थी उसका और रास्ते का ज्ञान नहीं था। इसलिए तुरंत स्मार्ट फोन पर गूगल मैप का सहारा लिया और गाड़ी लेकर गूगल गुरु के दिखाए मार्ग पर चलकर गंतव्य तक पहुंचने में सफल हो पाया। इस छोटी सी लगभग रोजाना होने वाली बात ने मुझे जीवन यात्रा पर चिंतन करने पर विवश कर दिया।

जीवन यात्रा में मुझ देही, रथी, शरीरी के पास साधन= देह, रथ, शरीर तो उपलब्ध है। यह मनुष्य तन सर्वोतम साधन न्यायकर्ता परमपिता परमेश्वर ने हमें हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों के फलों के आधार पर न्याय तुला पर तोलते हुए दिया। लेकिन इस सर्वोतम साधन के होने के बावजूद हम इसका उपयोग करते हुए अपने जीवन के लक्ष्य उद्देश्य की प्राप्ति में नहीं कर पा रहे। अपने उद्देश्य की प्राप्ति में असफलता का मूल कारण हम स्वयं= हमारी अल्पज्ञता, अबोधता है। हमें न तो ठीक से अपनी स्थिति का बोध है न ही अपने उद्देश्य अर्थात् ईश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान और न ही हम उस मार्ग को जानते हैं जिस पर चलकर हम अपनी मंजिल को पा सकें।

भौतिक जीवन में ऊपर दिए उदाहरण में ठीक ऐसी ही स्थिति में जब हमें अपने गंतव्य और मार्ग का ज्ञान नहीं था तो हमने गूगल मैप पर विश्वास किया और गूगल मैप ने हमें हमारी मंजिल तक पहुंचा दिया। अब प्रश्न उठता है कि अपनी जीवन यात्रा के संदर्भ में जीवन के लक्ष्य अर्थात् जन्म जाल के बंधन से छूट कर मोक्ष की प्राप्ति के लिए हम किस का सहारा लेकर किस पर विश्वास करें। इस समस्या का समाधान हमें ऋग्वेद के मंत्र में मिलता है–

विष्णो कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा। १/२२/१९

अर्थात् हे लोगो! ईश्वर=विष्णु के कर्मों को देखो। जिन कर्मों को देखकर मनुष्य अपने व्रतों को पालन करने में सफल होता है। वही परमात्मा इन्द्र हम जीवात्माओं–मनुष्यों का सच्चा सखा=मित्र है।

अब प्रश्न पैदा होता है कि ईश्वर के कर्मों को देखकर मनुष्य किस प्रकार अपने व्रतों/संकल्पों को पूरा करते हुए अपने लक्ष्य को पा सकता है। इसे समझने के लिए हमें पहले अपनी अर्थात् जीवात्मा की स्थिति फिर अपने संदर्भ में ईश्वर की स्थिति और वह मार्ग जिस पर चलकर हम अपने उद्देश्य अर्थात् ईश्वर को पा सकें– समझना होगा। हम अर्थात् देही, शरीरी, रथी जीवात्मा साधक हैं और अपने साधन यानि देह, शरीर, रथ के अन्दर ही हैं। हम साधक के रूप में इस ईश्वर प्रदत्त साधन का प्रयोग अपने साध्य की प्राप्ति के लिए करना चाहते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि हमारा साध्य=उपास्य, लक्ष्य कहाँ है? **ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशे तिष्ठति।** हमारा साध्य, उपास्य ईश्वर अपने अति सूक्ष्म लेकिन पूर्ण रूप से हमारी ही आत्मा के अंदर विराजमान है। ईश्वर का यह अत्यंत सूक्ष्म रूप भी स्वयं में पूर्ण है जैसे पानी का एक अणु भी पानी है और अथाह समुद्र की जलराशि भी जल है। यह हमारी अज्ञानता ही है कि हम अपने ही अंदर अपने साथ रहने वाले अपने ईश्वर को ढूंढने के लिए बाहर भटकते अपना शोषण करवाते हुए न जाने किस-किस पाखंड, अंधविश्वास का शिकार होते हैं। यह अज्ञानता, अबोधता, पाखंड, अंधविश्वास, कुरीतियां कोहरा ही तो हैं जो अपने इतने निकट रहने वाले ईश्वर से हमें अत्यन्त दूर रखती हैं। जिसका स्पष्ट संदेश यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के पांचवें मंत्र **'तद्दूरे तद्वन्तिके'** में आया है।

यह स्पष्ट हो गया कि वह सर्वान्तर्यामी ईश्वर तो हमारे निकट है लेकिन हम अपनी अज्ञानता, अबोधता के कारण उससे अत्यंत दूर हैं। हमें **उद्वयं तमसस्परि** का वेद संदेश समझकर इस अज्ञानता= पाखंडों, अंधविश्वासों से ऊपर उठना होगा, जहाँ इस अज्ञान के कोहरे के ऊपर सत्य ज्ञान के सूर्य का आलोक हमें ज्ञान से प्रकाशित कर देगा। इस सत्य ज्ञान के आलोक में हमारा पथ हमें स्पष्ट दिखाई देने लगेगा।

इसे और अधिक स्पष्ट करने का प्रयास करते हैं। जब मैं और मेरा ईश्वर दोनों ही मेरे भीतर हैं तो मुझे उसे

पाने के लिए अन्तर्यात्रा प्रारम्भ करनी पड़ेगी। यह अन्तर्यात्रा ही मुझे मेरे ईश्वर से मिलवा सकती है। इसके लिए हमें ईश्वरीय प्रेरणा के रूप में आने वाली अन्तरात्मा की आवाज को सुनकर उस पर चलना होगा। जैसे मैं गूगल मैप के दिखाए मार्ग पर चलकर अपने गंतव्य विवाह स्थल तक पहुंचा। यह ठीक है कि पाणिनी अष्टाध्यायी के सूत्र '**स्वतंत्रः कर्ता**' होने के नाते हम किसी भी कार्य को करने, ना करने वा अन्यथा किसी अन्य प्रकार से करने के लिए स्वतंत्र है। लेकिन स्वतंत्र कर्ता होने के कारण हम ईश्वरीय न्याय व्यवस्था में अपने द्वारा संपादित कर्मों के फल के भोक्ता भी हैं। यही ईश्वरीय न्याय व्यवस्था '**अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्**' ही तय करता है कि हम अपने उद्देश्य की प्राप्ति में सफल हो पायेंगे या नहीं।

इससे स्पष्ट हुआ कि हम प्रत्येक कार्य के संपादन से पूर्व मन में उठने वाले संकल्प और विकल्प की स्थिति में ईश्वरीय आज्ञा का यथावत पालन करें। हम कभी भी काम क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष की कलुषित भावनाओं के वशीभूत ईश्वरीय आदेश=प्रेरणा को अनसुना न करें। यदि हम ईश्वरीय आदेश को सुनकर ईश्वरीय आज्ञा का यथावत् पालन करते हुए धर्म मार्ग पर चलकर अपने व्रतों का पालन करेंगे तो अपने उद्देश्य अर्थात् मोक्ष को पाने में सफल होंगे। वह परमात्मा हमारा सच्चा मित्र, सखा, सहायक सदा हमारे लक्ष्य की प्राप्ति में हमारी सहायता करता है। ❐❐

वैराग्य क्या है?

वैराग्य क्या है? महर्षि पतञ्जलि महाराज ने वैराग्य की परिभाषा करते हुए योगशास्त्र में लिखा है–

दृष्टानुश्रविकविषयवितृष्णस्य वशीकारसंज्ञा वैराग्यम्।

(योग दर्शन 1/15)

अर्थात् देखे और सुने हुए विषयों की तृष्णा का भी मन में न रहना वैराग्य कहलाता है। जब सांसारिक विषयों की मन में इच्छा भी नहीं रहती तो मनुष्य का ध्यान परमात्मा की ओर चलता है। यही वैराग्य मनुष्य के लिए निर्भयता का कारण बन जाता है। यह बहुत ऊँची अवस्था है। इस तक सभी व्यक्ति नहीं पहुंच सकते। हाँ, यह सोचकर कि संसार के सभी पदार्थ नाशवान् हैं और हमसे एक–न–एक दिन छूटने वाले हैं, यदि व्यक्ति कुछ वैराग्य–भाव मन में धारण करते हुए प्रातः–सायं ईश्वर का चिन्तन करता रहे तो वह निर्भयता की ओर अग्रसर होता रहता है।

अध्यात्मवाद पर चलने वाला व्यक्ति ही वैराग्य धारण कर सकता है। जबकि भौतिकवाद के मार्ग पर चलने वाले लोगों ने केवल प्रकृति और उसके परिणाम को ही स्वीकार किया। आंखें जिसे देखती हैं, कान जिसे सुनते हैं, जिह्वा जिसका रस लेती है, त्वचा जिसका स्पर्श करती है, भौतिकवादी के लिए यही सत्य है। इसके विपरीत जो कुछ आँखों से दिखाई नहीं देता, जो नासिका से सूंघा नहीं जाता, जिसका जिह्वा से रस नहीं लिया जाता, उसकी दृष्टि में यह असत्य है, उसका कोई अस्तित्व नहीं है।

इसी आधार पर इन्होंने आत्मतत्त्व को ठुकरा दिया। उनकी परिभाषा केवल सांसारिक पदार्थों पर ही ठीक उतरती है। वे संसार और सांसारिक पदार्थों को ही सत्य मानते हैं। भूमि, सम्पत्ति, धन, स्त्री, और सन्तान तक ही इनकी दृष्टि रहती है। केवल शरीर, केवल दृश्यमान जगत् और केवल वर्तमान जीवन ही उनके निकट परम सत्य होते हैं।

प्रश्न यह है कि मनुष्य भौतिकवादी दृष्टिकोण अपनाता क्यों है? कठोपनिषद् के ऋषि ने इसका विवेचन करते हुए लिखा है–

पराञ्चि खानि व्यतृणत्स्वयम्भूस्तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्।
कश्चिद् धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्।।

(कठो॰ 4/1)

भावार्थ– अपनी ही सत्ता में स्थित रहने वाले परमात्मा ने इन्द्रियों को बाह्य विषयों पर गिरने वाला बनाया है, इसलिए मनुष्य बाह्य विषयों को देखता है, अन्तरात्मा को नहीं। कोई ध्यानशील और विवेकी पुरुष ही मोक्ष की इच्छा करता हुआ ह्रदयाकाशस्थ आत्मा को देखता है।

बाह्य विषयों के पीछे दौड़ने वाले व्यक्तियों के लिए उपनिषत्कार ने कहा है–

पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्।
अथ धीरा अमृतत्त्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते।।

(कठो॰ 4/2)

भावार्थ– जो अज्ञानी पुरुष बाह्य विषयों के पीछे दौड़ते हैं वे मृत्यु के फैले हुए जाल में फँसते हैं और ज्ञानी पुरुष निश्चय ही मोक्ष को जानकर संसार के अनित्य पदार्थों में सुख को नहीं चाहते।

(प्रा॰ रामविचार एम॰ए॰ द्वारा लिखित वेद सन्देश से साभार प्रस्तुति : प्रियांशु)

जीवन दर्शन

जीवन को उत्तम बनाने के चार उपाय-३

बृहदारण्यक उपनिषद् पंचम अध्याय, १३वें ब्राह्मण के आधार पर

❒दीनानाथ सिद्धान्तालंकार

प्रथम एवं द्वितीय उपाय=उक्थ व 'यजुः' के पश्चात् तृतीय उपाय 'साम' के विषय में पढ़िये-

दोहन का अभिप्राय शोषण नहीं है। दोहन का अभिप्राय न्यायुक्त साधनों से सृष्टि से लाभ उठाना है। शास्त्रों की भाषा में इसे 'सवन' कहा जाता है। 'साम' में यह तथ्य अंतर्हित है कि मनुष्य का लक्ष्य जहाँ ऊँचा, शुद्ध और पवित्र हो, वहाँ उसे प्राप्त करने के साधन भी न्यायपूर्ण हों।

तीसरा साधन-साम

प्रजापति ऋषि ने अपने शिष्यों के सम्मुख जीवन दर्शन के तीसरे अंग का उपदेश इस प्रकार किया-

साम प्राणो वै साम प्राणे हीमानि सर्वाणि भूतानि सम्यञ्चि सम्यञ्चि हास्मै सर्वाणि भूतानि श्रैष्ठ्याय कल्पन्ते सायुज्यं सलोकतां जयजि य एवं वेद।।

यह प्राण=जीवन 'साम' है। इस 'साम-प्राण'= जीवन में ही सब भूत=जीव-जंतु ठहरे हुए हैं। यह प्राण= जीवन सब में 'साम'= सम्यक् रूप से, अच्छी प्रकार से स्थित है। जो इस विद्या को जानते हैं वे श्रेष्ठता को प्राप्त होते हैं। इस 'साम' के द्वारा वे समानता और समीपता को प्राप्त होते हैं।

संसार में रहने का तीसरा नियम उपनिषत्कार ने इस श्लोक में बड़े उत्तम शब्दों में बताया है। 'सम्यक् अञ्चति सञ्गच्छते अस्मिन्निति साम' जिसमें सब कोई संगत=एक रूप हो जाएँ, वही साम है। इसका अभिप्राय यह है कि मनुष्य का स्वभाव ऐसा हो कि वह सबको अपने सामान बना ले अर्थात् अपने में लय कर ले।

आचार्य ने शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा- तुम अपने मुख के द्वारा विविध प्रकार के अन्न, कंद, फल मूल इत्यादि ठोस और दूध, जल इत्यादि तरल पदार्थ ग्रहण करते हो, पर कुछ घंटों बाद ही ये सात चक्कियों में पिसकर, वे सब अपना स्वरूप समाप्त कर अंतिम आठवें रूप में आ जाते हैं। ये खाद्य पदार्थ पहले रस बनते हैं, फिर रस से क्रमशः रक्त, मांस, मेद, हड्डी मज्जा और अंत में वीर्य का रूप धारण कर लेते हैं। प्रतिदिन आध सेर अन्न खाने वाले व्यक्ति के शरीर में एक मास के बाद एक तोला वीर्य बनता है। शरीर में शक्ति रुप से व्याप्त हो इसी का नाम 'ओज' व 'तेज' होता है। इस एकरूपता का नाम ही 'साम' है।

ग्रहण करने की शक्ति

इसके साथ-साथ सृष्टि में एक अन्य अद्भुत नियम भी काम करता है। एक खेत है। एक किसान सारे खेत को जोतता और साफ करता है। एक ही प्रकार का जल और वायु सब बीजों और पौधों को मिलता है। एक-एक फुट के अंतर पर डाले हुए गेहूं, मिर्च, नीम और खरबूजे के बीज उसी खेत से सर्वथा भिन्न भिन्न स्वाद लेकर बाहर आते हैं। उसी भूमि में से और उसी जलवायु में से एक बीज फीकापन ग्रहण करता है। दूसरा तीखापन, तीसरा कड़वापन और चौथा मिठास लाता है। भूमि, जल, वायु, आकाश, सूर्य, चंद्र के एक समान होते हुए भी बीज अपनी शक्ति, सामर्थ्य और गुणों के अनुसार इस विश्व में से अनुकूल तत्वों के साथ अपने आप को मिलाता है और प्रतिकूल का निराकरण करता है। इसी का नाम 'साम' अर्थात् समय प्रकार से संगति करना है। विश्व में तो भगवान ने सब कुछ भर दिया है। उसे ग्रहण करने को शक्ति अपने में होनी चाहिए। वेद के निम्नलिखित मंत्र में विश्व को कामधेनु से उपमा देते हुए उसमें से यथेष्ट दूध प्राप्त करने की शक्ति की प्रार्थना प्रभु से की गई है-

दुहे सायं दुहे प्रातर्दुहे मध्यन्दिनम्परि। दोहा अस्य ये सन्ति तान् विद्मानुपदस्वतः। अथर्व वेद ४/११/१२

हे प्रभु! इस विश्व रूपी कामधेनु को मैं प्रातः सायं और दोपहर को दोहने वाला बनूं। और जो इस दोहन विद्या को जानते हैं उनके चरणों के पीछे चलने वाला बनूँ।

साध्य और साधन

दोहन का अभिप्राय शोषण नहीं है। दोहन का अभिप्राय न्यायुक्त साधनों से सृष्टि से लाभ उठाना है। शास्त्रों की भाषा में इसे 'सवन' कहा जाता है। 'साम' में यह तथ्य अंतर्हित है कि मनुष्य का लक्ष्य जहाँ ऊँचा, शुद्ध

और पवित्र हो, वहाँ उसे प्राप्त करने के साधन भी न्यायपूर्ण हों। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष= इस चतुर्वर्ग की प्राप्ति ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य कहा गया है। प्रारंभ में धर्म और अंत में मोक्ष और बीच में अर्थ और काम को रखकर ऋषियों ने यह बता दिया कि मानव जीवन का प्रारंभ और अंत दोनों जहाँ धर्म और मोक्ष में समाविष्ट हों, वहाँ उसके साधन=अर्थ और काम भी इन दोनों के अनुकूल होने चाहिएँ। पश्चिम के कुछ विचारक इस सिद्धांत के पोषक हैं कि 'एंड जस्टिफाई द मीन्स' अंत भला सो भला। लक्ष्य की सिद्धि होनी चाहिए, साधन चाहे कैसे भी हों। हमारे देश में भी कुछ विचारक इसके अनुकरण में कल्याण समझते हैं पर यह विचारधारा बड़ी भ्रमपूर्ण है और कई उलझनों को पैदा करने वाली है।

कुछ लोग शंका किया करते हैं कि अगर थोड़ा झूठ बोलने से हजारों की जान बच सकती हो, अथवा थोड़ा सा पाप करने से देश की रक्षा होती हो तो इसमें क्या हानि है? इसका उत्तर यही है कि ऐसा संकट आने पर मनुष्य को वीरता के साथ यह कह देना चाहिए कि मैं अपनी जान दे दूँगा पर झूठ नहीं बोलूंगा। अथवा जो कुछ मुझे मालूम है वह नहीं बताऊंगा और इसके बदले कड़े से कड़ा दंड सहर्ष स्वीकार करने को तैयार हूँ। इस दृढ़ता से जहां आत्मिक शांति होगी वहां इसके परिणाम बड़े आश्चर्य जनक और हितकारी निकलेंगे। इतिहास में इस सत्य की पुष्टि के अनेक उदाहरण हैं। और अगर जान देनी भी पड़ी, तब वह बलिदान कभी व्यर्थ नहीं जाएगा। मनु के ये शब्द कभी नहीं भूलने चाहिएँ–

अधर्मेणेधते तावत् ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति ततस्तु समूलो विनश्यति।।

अन्याय, पाप और बुराई का अवलंबन करने से पहले तो उन्नति होती है, फिर चारों ओर कल्याण दिखाई देता है। फिर शत्रुओं पर विजय प्राप्त होता है और अंत में समूल नाश हो जाता है। क्या विश्व की विभिन्न जातियों के उत्थान–पतन का इतिहास मनु के ऊपर लिखे ३२ अक्षरों में नहीं समा जाता है!

एक बात और भी ध्यान में रखनी चाहिए। जब मनुष्य को बुराई की थोड़ी सी भी छूट दी जाती है तब अपने स्वभाव से वह कई बहाने निकालकर अधिक छूट ले लेता है। 'अजी, इसमें क्या रखा है! थोड़ा और कर लें तो क्या हर्ज है?' इत्यादि युक्तियाँ उसका मन अपने आप तलाश कर लेता है। पानी के समान सामान्य मनुष्य का मन नीचे की ओर अधिक झुकता है। उसे ऊपर चढ़ाने के लिए मानव को कोशिश करनी पड़ती है। नीचे गिराना तो सहज होता है। इसलिए 'साम' मार्ग के अनुसार साध्य और साधन दोनों की पवित्रता आवश्यक है।

प्रत्येक प्राणी की उपयोगिता

साम मार्ग का तीसरा अंग यह है कि इस सृष्टि में छोटा से छोटा कीटाणु या कोई पदार्थ व्यर्थ नहीं है। प्रत्येक की उपयोगिता है। विश्व का दोहन करने की जो कामना ऊपर कहे गए मंत्र में की गई है, उसका अभिप्राय यही है कि हम इस उपयोगिता के रहस्य को समझ कर लाभ उठाएं और उसका नाश ना करें। आज के मनुष्य ने अपने विज्ञान के बल पर सृष्टि में विनाश का इतना प्रबल चक्र चलाया है कि सारा संतुलन बिगड़ गया है। प्रजापति ऋषि के शब्दों में साम का फल श्रेष्ठता है और बाद में विजय मार्ग की समीपता और समानता अर्थात विजय की प्राप्ति है। (सतत)

संकल्प में स्थिर ही सफल है।

आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी 9412117965

एकलव्य को जब गुरु नहीं मिला तो किसी ने बताया कि स्थिरता पूर्वक अभ्यास करना ही सबसे बड़ा गुरु है। बस वह लग गया अभ्यास करने! असफल होता है तथापि स्थिरता पूर्वक निरन्तर अभ्यास में संलग्न है। तब एक दिन सफलता चरणों को चूमती है। एकलव्य की इस सफलता के समक्ष द्रोणाचार्य का धनुर्विद्याविशारद् शिष्य अर्जुन भी नतमस्तक है।

योग पिपासु दयानन्द को देखो कि जिन्होंने लक्ष्य बनाया है कि भगवान् के उज्ज्वल प्रकाश को प्राप्त करना है। यह योगी भी अपने लक्ष्य में ऐसा स्थिर हुआ कि इसे अपने लक्ष्य के अतिरिक्ति कुछ भी अन्य दृष्टिगोचर नहीं होता था। इस स्थिरता से इसे जहाँ अपने लक्ष्य की विशेषताओं का बोध हुआ वहाँ उस लक्ष्य को प्राप्त करने की शक्ति का जागरण होकर एक दिन भगवान् के उज्ज्वल प्रकाश परमानन्द का प्रसाद प्राप्त हो गया।

इस सफलता का क्या रहस्य है? इसे महर्षि याज्ञवल्क्य के शब्दों में सुनो–

तिष्ठन् वै वीर्यवत्तमो भवति।।

अर्थात् अपने संकल्प पर स्थिर रहने वाला आगे बढ़ जाता है, और सफलता पा लेता है।

ईश्वर में अविश्वास क्यों

❑शास्त्रार्थ महारथी पण्डित रामचन्द्र देहलवी जी का एक भाषण

ईश्वर-अविश्वास के आक्षेपों पर विचार करें तो स्पष्ट हो जाता है कि ये आक्षेप सर्वथा निराधार हैं। यदि ईश्वर को उसके वास्तविक रूप में लोगों के सामने रक्खा जाये और घर-घर ईश्वर-भक्ति और ईश्वर पूजा हो तो फिर वह दिन दूर नहीं जब भारत का बच्चा-बच्चा फिर आस्तिक होगा।

'ईश्वर के अस्तित्व के विषय में इतने भाषण होते हैं फिर भी लोगों का ईश्वर में विश्वास समाप्त होता जा रहा है?'

बात सत्य है और मुझे यह स्वीकार करना पड़ता है कि लोगों का ईश्वर में अविश्वास बढता जा रहा है। आज मैं ईश्वर में अविश्वास क्यों बढता जा रहा है, इसके क्या कारण हैं, इसी विषय पर विचार रखूँगा।

(१) परिवार में ईश्वर-भक्ति या पूजा का न किया जाना-

आजकल परिवारों में न ईश्वर-भक्ति है, न ईश्वर-आराधना की जाती है। संध्या, अग्निहोत्र आदि की ओर भी कोई ध्यान नहीं है। इनके न होने के कारण ईश्वर के अस्तित्व का विश्वास समाप्त होता जा रहा है। जहाँ हर समय रेडियो बजता है, सिनेमा के गाने गाये जाते हैं? और अल्लाह से ज्यादा नम्बर सुरैया का है, वहाँ ईश्वर को कौन पूछता है। जैसा घर का वातावरण होता है वैसा ही प्रभाव पड़ता है। घर में ईश्वर-भक्ति या पूजा न होने के कारण ईश्वर को भूल जाते है, ईश्वर का विचार ही नहीं रहता। ईश्वर में आस्था और विश्वास उत्पन्न करने के लिए ईश्वर-भक्ति और पूजा जारी रहनी चाहिए।

(२) ईश्वर को ऐसे रूप में रखना जो समझ में न आये-

ईश्वर सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, सर्वव्यापक है, परन्तु साम्प्रदायी लोगों ने उसको साधारण जनता के सामने उल्टे ढंग से रक्खा है। साम्प्रदायी लोगों ने परमात्मा को गलत समझा और उसको उसी गलत रूप में लोगों के सामने रख दिया। इसमें परमात्मा का कोई दोष नहीं क्योंकि परमात्मा तो सब को ज्ञान देता है। जब भी कोई बुरा कर्म करने लगता है तो उसे उस कार्य के करने में भय, शंका और लज्जा होती है, परन्तु इस ज्ञान को लेता कोई-कोई है। जैसे मच्छर सारे में पिन-पिन करता है, परन्तु सुनाई उस समय देता है जब कान के पास आता है। साम्प्रदायी लोगों ने अपने अज्ञान के कारण मकान के एक आले में गणेश की मूर्ति रखकर ईश्वर घोषित कर दिया, परन्तु क्या गणेश ईश्वर हो सकता है? कदापि नहीं। क्या हाथी का सिर कभी किसी बच्चे के सिर पर आ सकता है? ऐसी बातों से अविश्वास तो होता ही है। महर्षि दयानन्द ने अपने अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश में मूर्तिपूजा को अवैदिक बताते हुए इसके खण्डन में १६ युक्तियाँ दी हैं। मूर्ति पूजकों ने मूर्तियों को ईश्वर का प्रतिनिधि बना दिया। मूर्ति नें भी इतनी गैरत (शर्म) तो की कि ईश्वर नहीं खाता तो वह भी नहीं खाती, क्योंकि ईश्वर का प्रतिनिधित्व कर रही है। आज सारी बातें उल्टी हो गई हैं। लोग ईश्वर को बनाकर उसके मालिक हो गए हैं। जो सबका ख्याल रखता है लोग उसका ख्याल रखने लगे हैं उसको ताला लगा कर रखते हैं। उसे जगाने और खिलाने का ध्यान भी पुजारी रखता है। वास्तव में तो पुजारी लोगों को यह शिक्षा देता है कि मूर्ति जड़ है, चेतन नहीं है, इसकी पूजा नहीं करनी चाहिए परन्तु लोग छोड़ते नहीं हैं। पुजारी का अर्थ है पूजा+अरि- पूजा का शत्रु। दिन के प्रकाश में बती जला कर और घण्टी बजाता हुआ पुजारी लोगों को मूर्ति का एक-एक अवयव दिखाता है और उन्हें यह बताता है कि अच्छी प्रकार देख लो- यह पत्थर है, जड़ है, चेतन नहीं। इसी प्रकार एक बार नहीं, दो बार नहीं, सात बार ऊपर से नीचे तक दिखाता है कि पत्थर है। लोग फिर भी हाथ जोड़े ही खड़े रहते हैं तो वह हाथ में पानी लेकर उनके ऊपर फेंकता है कि अब भी समझ में नहीं आता तो एक चुल्लू पानी में डूब मरो। परमात्मा का वास्तविक स्वरूप तो वेद ही बताता है:-

सपर्यगात्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरं शुद्धमपापविद्धम्।
कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्य।। यजु० ४०/८

वह प्रभु सर्वत्र व्यापक, सर्वोत्पादक, शरीर तथा नस-नाड़ी के बन्धन से मुक्त, शुद्ध और पाप-रहित है।

एक व्यक्ति कर्म तो अच्छा कर रहा है और उसका फल उसे दु:ख मिले, यह कदापि नहीं हो सकता। दूसरी ओर एक व्यक्ति कार्य बुरा कर रहा है और उसे फल अच्छा मिल जाये, यह भी ठीक नहीं। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी। एक व्यक्ति ने चोरी की और फिर सन्ध्या करने लगा। पुलिस आई और उसे पकड़ कर ले गई। इस व्यक्ति को सन्ध्या के कारण नहीं पकड़ा गया।

वह क्रांतदर्शी, मन की बात जानने वाला, सर्वत्र प्रकट और स्वतंत्र सत्ता है तथा ठीक-ठीक रचना करता है।

२ ब्रह्म ही सत्य-जगन्मिथ्या :-

कुछ लोग कहते हैं कि ब्रह्म ही ब्रह्म है और सब कुछ मिथ्या है परन्तु यह भी गलत बात है। कोई भी वस्तु अकेली बेकार होती है चाहे डाक्टर हो या प्रोफेसर, दुकानदार हो या दस्तकार। एक डाक्टर है परन्तु न उसके पास दवाई है, न औजार है तो उसका होना और न होना बराबर है। डाक्टर है, दवाई भी है परन्तु मरीज नहीं तब भी बेकार है। अत: सिद्धांत यह निकला कि किसी भी कार्य के लिए तीन वस्तुओं का होना आवश्यक है। इसी प्रकार परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति तीनों का होना अत्यन्तावश्यक है। यह सिद्धांत भी अशुद्ध है जीवात्मा परमात्मा बन जाता है। जीवात्मा परमात्मा कदापि नहीं बन सकता।

(३) बहुत प्रार्थना करने पर भी इच्छा की पूर्ति न होना-

कभी-कभी ऐसा होता है कि बहुत बार प्रार्थना करने पर भी इच्छा पूरी नहीं होती। इससे ईश्वर में अविश्वास उत्पन्न होता है। जब लोगों की इच्छा पूरी नहीं होती तो वे कहते हैं कि परमात्मा अपने पुत्र जीवात्मा की इच्छा पूरी करने में बुरी तरह फेल हो गया। परन्तु यह बात ठीक नहीं। इसका समाधान एक दृष्टान्त द्वारा बहुत अच्छी प्रकार समझ में आ जायेगा। एक पिता अपने बच्चे के साथ बाजार जा रहा है। बाजार में जाते हुए बच्चा बड़े-पकौड़े देखता है और पिता से कहता है दिलवा दो। पिता कहता है तुम्हें काली खांसी (Hopping Cough) है, यह हानि करेंगे। बच्चा दूसरी और तीसरी बार कहता है परन्तु पिता दिलवाता नहीं है। घर आकर बच्चा अपने सब भाई-बहिनों को इकट्ठा करके कहे कि हमारे पिता जी हमारी इच्छा की पूर्ति में फेल (Miserably Fail)) हो गये हैं तो क्या यह ठीक है? इसी प्रकार बच्चा पतंग उड़ाने जा रहा हो और पिता कहे कि नीचे चलो, तो क्या पिता बच्चों की इच्छा पूर्ति करने में फेल हो गया? ठीक यही दशा उस प्रार्थना की है। जब ईश्वर देखता है कि इस प्रार्थना से लाभ नहीं होगा तो वह इच्छा की पूर्ति नहीं करता। ईश्वर फेल नहीं होता।

प्रार्थना का फल इच्छा की पूर्ति नहीं अपितु प्रार्थना का फल है अभिमान का नाश, उत्साह की वृद्धि और सहाय का मिलना। कभी मनुष्य जब किसी कठिन कार्य को कर लेता है तो उसको अपनी शक्ति का अभिमान हो जाता है, परन्तु जब वह यह सोचता है कि ईश्वर अधिक शक्तिशाली है तो उसका अभिमान चूर हो जाता है। जब मनुष्य का ईश्वर में पूर्ण विश्वास होता है तो उसमें उत्साह की वृद्धि होती है और कार्य करते हुए उसमें सहायता भी प्राप्त होती है। उपासना से पहाड़ के समान दु:ख आने पर भी मनुष्य घबराता नहीं क्योंकि वह समझता है इस कष्ट में भी मेरी भलाई ही है।

एक बच्चे को उसके माता-पिता नश्तर लगवाने के लिए ले गए। माता-पिता दोनों ने बच्चे के हाथ और पैरों को कसकर पकड़ लिया। बच्चा सोचता है कि यह क्या हो रहा है, जो माता-पिता मेरे लिए दूसरों से लड़ते थे, आज क्या कर रहे हैं? परन्तु माता-पिता किसी बुरी भावना से ऐसा नहीं कर रहे अपितु अपने पुत्र की भलाई के लिए ऐसा कर रहे हैं। आपत्ति और कष्ट आने पर भी ईश्वर पर दृढ़ विश्वास होना चाहिए। ईश्वर जो कुछ करता है अच्छा ही करता है।

(४) भगवान जागरूक नहीं, प्रमाद में पड़ा हुआ है।

पुलिस कितनी सतर्क है। दिन का तो कहना ही क्या, रात में भी चोर और डाकुओं को पकड़ती है, किन्तु ईश्वर कुछ नहीं करता। इसलिए प्रमादी है। उसके प्रमादी होने से ही लोगों में ईश्वर-अविश्वास बढ़ता जा रहा है।

समाधान-यहाँ एक ही बात के दो हिस्से कर दिये हैं। गवर्नमैंट परमात्मा का ही प्रबन्ध है। वह ईश्वर के कार्य में सहायक है। ईश्वर सब कुछ देखता है, परन्तु सब कुछ नहीं कर सकता और सब कुछ करना आवश्यक भी नहीं। परमात्मा कर्मों के अनुसार जीव को फल देता है, इसमें तनिक भी त्रुटि नहीं हो सकती। परमात्मा सदा जागरूक रहता है, वह प्रमादी कदापि नहीं हो सकता।

(५) किसी प्रिय व्यक्ति का नाश हो जाना या मर जाना-

जब किसी व्यक्ति का कोई प्रिय सम्बन्धी मर जाता है तो उसे ईश्वर में अविश्वास हो जाता है। एक पीर जी की घरवाली मर गई तो कहने लगा, 'तेरा क्या गया, मेरा घर बिगड़ गया। इन बच्चों को तू पालेगा क्या?'

समाधान-जब ईश्वर की ओर से विपत्ति आती है

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

स्वास्थ्य चर्चा

ज्वर की सरलतम प्राकृतिक चिकित्सा

आयुर्वेद शिरोमणि **डॉ० मनोहरदास अग्रावत** एन०डी० 'विद्यावाचस्पति' (प्राकृतिक चिकित्सक)

सभी प्रकार के ज्वरों में ठण्डी मालिश का उपचार एक सम्पूर्ण और चमत्कारिक इलाज है। इससे शरीरस्थ विजातीय बहिर्गत होता है, मूल प्रकृति की क्षमता बढ़ती है, शरीर और मन प्रसन्न रहता है तथा ज्वर भयानक अवस्था की ओर कभी अग्रसर नहीं होता।

ज्वर स्वस्थ शरीर और स्वास्थ्य की एक अनिवार्य मांग है, इस बात को बहुत कम लोग समझते हैं। अक्सर ज्वर होते ही लोग घबरा जाते हैं। डॉक्टरों, वैद्यों, हकीमों या दवा जानने वाले किसी जानकार पुरुष के पास दौड़ पड़ते हैं। मानो ज्वर न हुआ बबाल खड़ा हो गया हो। इक्कीसवीं सदी के इस वैज्ञानिक युग में हम, जड़ विज्ञान के साथ प्रकृति के आश्चर्यजनक विज्ञान–शरीर को न समझ सके तो निश्चय ही बड़ी लज्जाजनक बात होगी। ज्वर की रचना शरीर में क्यों होती है। इस तथ्य को समझना प्रत्येक शरीरधारी का कर्तव्य है।

ज्वर शरीर में उसी अवस्था में उत्पन्न होता है जब रक्त में विजातीय द्रव्य अत्यधिक संग्रह हो जाता है। शरीर की मूल प्रकृति असाधारण तापमान से उसे द्रव के रूप में परिणत कर मल, मूत्र, स्वेद (पसीना), श्वासोच्छ्वास के रास्ते से निकालने का पवित्र प्रयास करती है। मूल प्रकृति का यही प्रयास ज्वर (बुखार) के रूप में प्रस्तुत होता है। लगे हाथ मैं अपने पाठकों को यह भी बता दूँ कि शरीर में दो भिन्न किस्म के विजातीय द्रव्यों के सम्पर्क–संघर्षण से शरीर में तापमान बढ़ जाता है।

अत्यधिक मिर्च–मसाले, मांस, शराब, मादक द्रव्य, गरिष्ठ, ठण्डे, बासी, खाद्य ग्रहण करने वाले, कम पानी पीकर शरीर को गंदा रखने वाले व्यक्ति एवं नियमित स्नान न करने वाले पुरुष, स्त्री ही ज्वर के चंगुल में फंसते हैं। ऐसे व्यक्ति की रक्त नलिकाओं की सतह में विशिष्ट जाति–विजातीय द्रव्य संग्रह होता रहता है। ठण्ड, भय, अनिद्रा, अधिक भय, कुपथ्य इत्यादि कारणों से वह स्थान–च्युत होकर रक्त में घुले सामान्य विजातीय से मिलने लगता है। बिजली के फेच और न्यूट्रल करेंट आपस में मिलते ही जैसे आग और गर्मी पैदा करते हैं ऐसे ही शरीरस्थ दो विभिन्न जातीय द्रव्यों के स्पर्श–सम्पर्क से रक्त में तापमान बढ़ जाता है।

ज्वर की रचना में शरीर शास्त्रियों के विभिन्न मत इस सिद्धान्त के आगे नतमस्तक रहेंगे। चूंकि यह नई जानकारी विज्ञान सम्मत है। कुनैन आदि कटु विषों से ज्वर ठीक करने का मतलब दोनों विजातीय द्रव्यों के सम्मिलन की प्रक्रिया में अवरोध उपस्थित करना है। विषोपचार से रक्त नलिकाओं की सतह से उद्वेलित हुआ विजातीय पुनः शांति धारण कर लेता है, लेकिन नाड़ियों की सतह में तथाकथित विजातीय द्रव्य अधिक परिमाण में उपस्थित रहा तो संभव है विषोपचार उसके उद्वेलन को न रोक सके। टाईफायड में यह बात प्रत्यक्ष देखी जाती है।

प्रस्तुत प्रबन्ध रचना में हमें यह जानना है, क्या कमी हो जाय तो कौन सा उपचार ग्रहण करना चाहिए जिससे ज्वर की अवस्था चैन से गुजर जाय, शरीर की शक्ति व धन का अपव्यय न हो और ज्वर से शीघ्र ही मुक्ति मिल जाए। डॉक्टर, वैद्यों का विषोपचार वैसा करने का एक सरल सा तरीका है लेकिन इस तरह ज्वर ठीक करा लेने में रोगी के सिर पर एक अनिश्चित खतरा मंडराया करता है। चूंकि ज्वर के ताप से जो विकार गल–छंटकर बाहर आ सकता था, वह बाहर नहीं आ सका। वह विकार–कालान्तर में किसी भी आधि–व्याधि का रूप ले सकता है। वास्तव में ज्वर के उपचार में हमारा ध्यान ज्वर की मदद करने का होना चाहिये न कि उसके अस्तित्व को तत्काल समाप्त कर देने का।

पाठकों को हम ज्वर में एक नया उपचार इस्तेमाल करने की सलाह देते हैं जो निरापद एवं सर्वथा विश्वस्त है। यह उपचार न तो खर्चीचा है, न पेचीदा, न ही किसी तरह की चिंता खड़ी करने वाला।

ज्वर कैसा ही क्यों न हो, रोगी के शरीर को सुबह–शाम गीले वस्त्र की ठंडी मालिश देनी चाहिये। इसे स्पंजबाथ, घर्षण स्नान, वस्त्र स्नान से भी जाना जाता है। बारीक कपड़े को ठण्डे पानी में भिगोकर हाथ के पंजे पर फैला लेना चाहिये तथा इस हाथ को रोगी के शरीर पर मालिश की तरह रगड़ना चाहिये। एक हल्की और सुख देने

वाली मालिश की तरह। यह मालिश एक समय में करीब १५ से ३० मिनट की दी जाती है और वस्त्र को कई बार पानी में झंकोर कर फिर हाथ के पंजे पर फैलाना पड़ता है। आप देखेंगे कि बाल्टी का पानी स्पंज के बाद कितना गंदा और मटमैला हो गया है। यह सब रोगी के शरीर का विकार ही है जो जल के सहयोग से वस्त्र में आता रहा।

ठण्ड देकर आने वाले ज्वर में उस समय यह ठण्डी मालिश नहीं देनी चाहिए, जब शरीर में कंपकंपी मौजूद हो। मलेरिया ज्वर में कड़ाके की ठण्ड महसूस होती है। रोगी खूब ओढ़ने की मांग करता है। ऐसे समय में रोगी को प्रति आध घंटे एक गिलास गर्म पानी देना चाहिए। गर्म पानी पीने में अरूचिकर लगे तो इसमें थोड़ा नींबू का रस और कुछ सेंधा नमक डाल देना चाहिए। दो-तीन गिलास पूरे होते-होते ज्वर गर्मदशा अधिकार कर लेगा। रोगी की ठण्ड भाग जाएगी और वह ठण्डी हवा का स्पर्श पाने को आकुल हो जाएगा। ऐसी अवस्था आने पर ठण्डी मालिश निर्भय होकर दी जा सकती है। ठण्डी मालिश देते समय रोगी को सोये रहने देना चाहिए। जिस-जिस अंग पर मालिश चलाई जाये उसे उघाड़ लेना चाहिए और मालिश खत्म करने के साथ किसी सूखे स्वच्छ पुराने वस्त्र से उस अंग को पोंछ कर ढक देना चाहिए।

सभी प्रकार के ज्वरों में ठण्डी मालिश का उपचार एक सम्पूर्ण और चमत्कारिक इलाज है। इससे शरीरस्थ विजातीय बहिर्गत होता है, मूल प्रकृति की क्षमता बढ़ती है, शरीर और मन प्रसन्न रहता है तथा ज्वर भयानक अवस्था की ओर कभी अग्रसर नहीं होता।

ठण्डी मालिश के अलावा 'एनिमा (बस्तियंत्र)' का सहारा लेना ज्वर पर पूरा अधिकार पाने के समान है। एनिमा बड़ी आंत को साफ करके शरीर में दिव्यता की अनुभूति जाग्रत करता है। साधारण ज्वर एवं सर्दी के सहवर्ती रोग तो एक दो बार लिए गए एनिमा से ही नष्टप्रायः हो जाते हैं। अतः ज्वर (बुखार) के पहले दिन से ही एनिमा द्वारा बड़ी आंत साफ करने का सिलसिला चालू कर देना चाहिए। ज्वर में आरंभ से ही एनिमा लेना शुरु कर दिया जाए तो ज्वर कभी भी खतरे की ओर नहीं बढ़ेगा। देखा गया है- ज्वर के ९० प्रतिशत कारण पेडू के मलसंचय से सम्बन्ध रखते हैं।

ज्वर के रोगी को भूख नहीं लगती तो आहार के लिए उससे कदापि आग्रह नहीं करना चाहिए। ज्वर में निराहार स्वयं में एक औषध की पूर्ति है। ज्वर में भूख लगे तो मलाई रहित दूध में दो-तीन छुहारे, तुलसी के पत्ते अथवा अदरख का टुकड़ा डालकर पुनः उबाल और छानकर पीने के लिए देना चाहिए। उबाले हुए मूंग का पानी, धान की खीलें, संतरा, मुनक्का, किशमिश, उबले अंजीर, पपीता आदि चीजें दी जा सकती हैं। ज्वर की अवस्था समाप्त हो जाने के पश्चात् धीरे-धीरे ठोस आहार शुरु करना चाहिये। मैदा, घी, तेल तथा शक्कर, गुड़, उड़द और बेसन की चीजें एक लम्बे समय तक परहेज करने योग्य हैं। आहार चालू करने पर कुछ दिन ठंडी मालिश चलाई जा सकती है, पर एनिमा तत्काल बंद कर देना चाहिए। हाँ जिस दिन कब्ज की अनुभूति हो उस दिन एनिमा ले लेना जरूरी है।

ज्वर के साथ खाँसी हो जाती है, छाती में बलगम हो तो ४-६ दिन तक छाती को लपेट लेना हितकर होगा। धोती या साड़ी को पानी में भिगोकर अच्छी तरह निचोड़ लेना चाहिए तथा तीन-चार तह करके छाती के चारों तरफ लपेट कर ऊपर से फलालेन या कम्बल की पट्टी लपेट लेने का नाम ही छाती की लपेट है। यह लपेट एक से डेढ़ घंटे तक छाती पर रहती है। इस लपेट से खाँसी व छाती के विकार जल्द से जल्द जाने की तैयारी कर लेते हैं।

-मनोहर आश्रम, उम्मैदपुरा, पो० तारापुर-४५८३३०
जावद-मध्यप्रदेश, जिला नीमच

औषधीय गुणों से भरपूर है तुलसी

प्राचीन काल से ही भारतवर्ष में तुलसी को विशेष महत्त्व दिया जाता है। घर में तुलसी का पौधा होने से बहुत सी बीमारियों से बचा जा सकता है। तुलसी श्वेत और श्यामा दो प्रकार की होती है। तुलसी के कुछ औषधीय प्रयोग प्रस्तुत हैं।-

- कील मुंहासों में तुलसी के पत्ते पीसकर नींबू व मलाई के संग प्रतिदिन उबटन करने से चेहरे से दाग धब्बे व झाईयाँ दूर हो जाती हैं।
- तुलसी के पत्ते के रस में चीनी डालकर पीने से लू नहीं लगेगी व चक्कर आने पर भी सेवन करने से लाभ होगा।
- सूजन हो जाने पर तुलसी के पत्तों का लेप करें।
- मलेरिया में तुलसी के पत्तों की चाय अति लाभदायक है।
- खांसी में तुलसी के पत्तों का रस शहद व अदरख के रस के साथ बराबर मात्रा में पीना लाभकारी है।
- जल जाने पर तुरन्त जले हुए भाग पर तुलसी के चार छ पत्ते मसलने पर जलन दूर होगी व छाले भी नहीं पडेंगे।
- सिरदर्द में तुलसी के सूखे पत्तों का चूर्ण शहद में मिलाकर सुबह शाम चाटें।
- कान में सूजन, घाव, फुंसी हो तो तुलसी के पत्तों का रस हल्का गुनगुना दो तीन बूंद डालने से लाभ होगा।
- दाद हो जाने पर तुलसी के पत्ते रगड़ें।

❑कृति अग्रवाल

जानते हो!

❐आदित्य प्रकाश

◆पहली रंगीन फोटो जैम्स मैक्सवेल ने १८६१ में बनाई। यह फोटो टारटन रोबिन की थी।

◆गिरगिट की जीभ उसके शरीर से डेढ़ गुणा ज्यादा लम्बी होती है।

◆आदमी की आयु बढ़ने के साथ-साथ उसका आंखों का रंग हल्का होता जाता है।

◆पिल्ले के तीस और कुत्ते के ४२ दांत होते हैं।

◆चींटी बेहोश होती है तो वह दायीं तरफ गिरती है।

◆आदमी अपने औसत जीवन में इतना पैदल चल लेता है कि यदि उसे मिलाया जाए तो पूरी दुनिया के तीन चक्कर हो सकते हैं।

◆काकरोच छः टांगों वाला सबसे तेज जीव है। यह एक सैकेंड में एक मीटर की दूरी तय कर सकता है।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रस्तुति : हर्षित सोनी

☺पत्नी (पति से) जब तुम कार मोड़ते हो तो मुझे बड़ा डर लगता है। कहीं एक्सीडेंट न हो जाए।

पति : इसमें डरने की क्या बात है? तुम भी मेरी तरह आँखें बंद कर लिया करो।

☺नौकर (मालिक से) साहब, आप के यहाँ काम करते मेरे बाल सफेद हो गए लेकिन आपने मेरी तनखाह नहीं बढ़ाई?

मालिक : ठीक है, बढ़ा देंगे, अभी यह दस रुपये का नोट लो और बाजार जाकर अपने बाल काले करवा आओ।

☺पहला कैदी- 'तुम जेल में कैसे आ गए?'

दूसरा- 'रस्सी चुराने के अपराध में।'

पहला-(आश्चर्य से) 'ऐसा कैसे हो सकता है?'

दूसरा- 'ऐसा ही हुआ है, असल में उस रस्सी के दूसरे सिरे पर भैंस बँधी थी।'

☺एक मित्र : 'क्या यह सही है कि हर व्यक्ति को एक दिन मरना है?'

दूसरा : 'हाँ, यह एकदम सच है।'

पहला : मैं सोचता हूँ, जो आदमी सबसे आखिर में मरेगा, उसे शमशान घाट कौन ले जाएगा?

☺पति (पत्नी से) : आज का अखबार कहाँ है?

पत्नी- पता नहीं, मैं तो कल से ढूँढ रही हूँ।

☺टेलीफोन पर बातचीत चल रही थी-

'हैलो, आप कौन बोल रहे हैं?'

'जी हाँ, मैं ही बोल रहा हूँ आप कौन बोल रहे हैं?'

'जी, इधर भी मैं ही बोल रहा हूँ।'

प्रहेलिकाः

❐अनुव्रत आर्य

☹हरी जन्मी लाल मरी, मोतियों से हूँ भरी,
खाने के स्वाद की मैं जान, अब तो मुझे पहचान।

☹पहला आधा खटखट में, बाकी आधा मलमल में।
कर देता हूं नींद हराम, खून चूसना मेरा काम।।

☹एक फूल है काले रंग का, सर पर सदा सुहाय।
वर्षा धूप में खिल जाता, छाया में मुरझाए।।

☹रंग है उसका पीला, तपाया है तो ढ़ीला,
पीटा है तो फैला, कीमती है वह छैला।

☹काली हूं गुणवाली हूं, डालों पर रहती हूं डोल
जब मस्ती में बोलती, मिसरी सी देती हूं घोल।।

☹ताज सजा है सुन्दर सिर पर, बादल देखे झूम उठा,
खूब सजे हैं पैसे देह पर, वन उपवन की है शोभा।।

☹कभी नहीं खाना खाए, और पीये नहीं पानी।
उसकी बुद्धि के आगे तो हार मानते ज्ञानी।।

☹धूप लगे पैदा हो जाता, छांव लगे कुम्हलाता।
सभी इसका अनुभव करते हवा लगे मर जाता।।

मिर्च/खटमल/छतरी/सोना/कोयल/मोर/कम्प्यूटर/पसीना

विचार कणिकाः

❐प्रतिष्ठा

◆बुराई का सम्पर्क अच्छाई को भी दूषित कर देता है।

◆विचारों के युद्ध में पुस्तकें ही अस्त्र हैं। -बनार्ड शॉ

◆लगन का बड़ा महत्त्व है। जिसमें लगन है वह बूढ़ा भी जवान है; जिसमें लगन नहीं, वह जवान भी मृतक है।

◆मानव का दानव होना उसकी हार है, देवता होना चमत्कार और मनुष्य होना उसकी जीत है।

◆सच्चा प्रेम पवित्रता है और पवित्रता प्रेम -रामतीर्थ

◆विनम्रता समस्त गुणों की आधारशिला है। -कन्फ्यूशियस

◆संसार में सभी वस्तुओं में विद्या सबसे श्रेष्ठ है। न तो यह चुराई जा सकती और न ही प्रयोग करने पर घटती है।

◆यदि तुम सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने के आकांक्षी हो तो सबसे नीचे से चढ़ना शुरू करो। -साइरस

◆कर्त्तव्य और वर्त्तमान हमारा है, फल और भविष्य ईश्वर का है- होरेस ग्रेले

◆थोड़ा दोष अतिशय उपकार का नाश नहीं करता -भारवि

कथा की सीख

सबसे शक्तिशाली वस्तु

एक दिन गुरुकुल के विद्यार्थियों में इस बात पर बहस छिड़ गयी कि आखिर इस संसार की सबसे शक्तिशाली वस्तु क्या है? कोई कुछ कहता कोई कुछ! जब पारस्परिक विवाद का कोई निर्णय न निकला तो शिष्य गुरुजी के पास गए। गुरुजी उनकी बात सुनकर कुछ सोचने के बाद बोले–

'तुम्हारी बुद्धि खराब हो गयी है! यह क्या अनाप–शनाप निरर्थक प्रश्न कर रहे हो?' और एक ओर चले गए।

हमेशा शांत स्वभाव रहने वाले गुरु जी से किसी ने इस प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं की थी। सभी शिष्य उत्तेजित हो उठे और गुरुजी के व्यवहार की आलोचना करने लगे।

अभी वे आलोचना कर ही रहे थे कि गुरु जी उनके समक्ष पहुंचे और बोले–मुझे तुम सब पर गर्व है, तुम लोग अपना एक भी क्षण व्यर्थ नहीं करते और अवकाश के समय भी ज्ञान चर्चा किया करते हो।

गुरुजी से प्रसंशा के बोल सुनकर शिष्य गदगद हो गए। उनका स्वाभिमान जाग्रत हो गया। चेहरे खिल उठे।

गुरुजी ने फिर सभी शिष्यों को समझाते हुए कहा– 'मेरे प्यारे शिष्यो! आज अवश्य आप लोगों को मेरा व्यवहार कुछ विचित्र सा लगा होगा। वस्तुतः मैंने ऐसा जानबूझ आपके प्रश्न का उत्तर देने के लिए किया था।'

'देखिये, जब मैंने आपके प्रश्न के उत्तर में आपको भला–बुरा कहा तो आप सभी क्रोधित हो उठे और मेरी आलोचना करने लगे, लेकिन जब मैंने आपकी प्रसंशा की तो आप सब प्रसन्न हो उठे। पुत्रो, संसार में वाणी से बढकर दूसरी कोई शक्तिशाली वस्तु नहीं है। वाणी से ही मित्र को शत्रु और शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है।' वाणी का प्रयोग व्यक्ति को सोच समझ कर करना चाहिए। वाणी का माधुर्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है।'

गुरु जी की बातें सुनकर शिष्य संतुष्ट होकर लौट आए और उस दिन से मीठा बोलने का अभ्यास करने लगे।

मित्रो! हमारी बोली या हमारी वाणी बेहद शक्तिशाली होती है। आवश्यकता है इसका सही प्रयोग करने की। यदि हम अपनी बोली अच्छी रखते हैं और अपनी बात बिना औरों को ठेस पहुंचाए हुए कहते हैं तो यह हमारे व्यक्तित्व को संवारता है और हमें लोगों के बीच लोकप्रिय बनाता है। वहीं अगर हम सामान्य बात भी निरादर या क्रोध के साथ कहते हैं तो न तो हम ठीक से अपनी बात कह पाते हैं और न ही दूसरों के हृदय में अपने लिए कोई जगह बना पाते हैं। अतः हमें हेमशा सही शब्दों और सही लहजे का चुनाव करना चाहिए।

प्रस्तुति : **संजय चुघ जींद**

नम्रता का पाठ

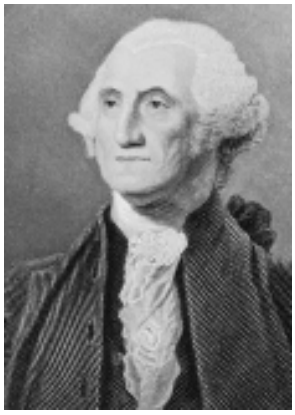

एक बार अमेरिका के राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन नगर की स्थिति का जायजा लेने के लिए निकले। रास्ते में एक जगह भवन का निर्माण कार्य चल रहा था। वह कुछ देर के लिए वहीं रुक गए और वहां चल रहे कार्य को गौर से देखने लगे। कुछ देर में उन्होंने देखा कि कई मजदूर एक बड़ा–सा पत्थर उठा कर इमारत पर ले जाने की कोशिश कर रहे हैं। किंतु पत्थर बहुत ही भारी था, इसलिए वह इतने मजदूरों के उठाने पर भी उठ नहीं आ रहा था।

ठेकेदार उन मजदूरों को पत्थर न उठा पाने के कारण डांट रहा था पर खुद किसी भी तरह उन्हें मदद देने को तैयार नहीं था। वाशिंगटन यह देखकर उस ठेकेदार के पास आकर बोले, 'इन मजदूरों की मदद करो। यदि एक आदमी और प्रयास करे तो यह पत्थर आसानी से उठ जाएगा।' ठेकेदार वाशिंगटन को पहचान नहीं पाया और रौब से बोला, 'मैं दूसरों से काम लेता हूँ, मैं मजदूरी नहीं करता।'

यह जवाब सुनकर वाशिंगटन घोड़े से उतरे और पत्थर उठाने में मजदूरों की मदद करने लगे। उनके सहारा देते ही पत्थर उठ गया और आसानी से ऊपर चला गया। इसके बाद वे वापस अपने घोड़े पर आकर बैठ गए और बोले, 'सलाम ठेकेदार साहब, भविष्य में कभी तुम्हें एक व्यक्ति की कमी मालूम पड़े तो राष्ट्रपति भवन में आकर जार्ज वाशिंगटन को याद कर लेना।'

यह सुनते ही ठेकेदार उनके पैरों पर गिर पड़ा और अपने दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगने लगा। ठेकेदार के माफी मांगने पर वाशिंगटन बोले, 'मेहनत करने से कोई छोटा नहीं हो जाता। मजदूरों की मदद करने से तुम उनका सम्मान हासिल करोगे। याद रखो, मदद के लिए सदैव तैयार रहने वाले को ही समाज में प्रतिष्ठा हासिल होती है। इसलिए जीवन में ऊंचाइयां हासिल करने के लिए व्यवहार में नम्रता का होना बेहद जरूरी है।'

उस दिन से ठेकेदार का व्यवहार बिल्कुल बदल गया और वह सभी के साथ अत्यंत नम्रता से पेश आने लगा।

भजनावली

कवि ज्ञानीराम शास्त्री (अलेवा –जींद)

करल्यो जिन्दे जी सेवा

मात पिता के मरें बाद आंसू टपका कै के होगा।
जिन्दे जी जूते मारे फेर फूल चढ़ा कै के होगा।।

कहणा मान्या नहीं कदे फेर तिलक लगाना ठीक नहीं
छुए कोन्या पैर कदे फेर शीश झुकाना ठीक नहीं
राखे सदा अँधेरे मंह फेर दीप जलाना ठीक नहीं
नाक चढ़ा कै रोटी दी फेर पिंड भराना ठीक नहीं
बोले कड़वे बोल सदा फेर श्राद्ध करा कै के होगा।१।।

बिछुड़े बाद बड़ाई करते बेटे पोते देख लिए
कर कर याद लाड बचपन के पाछै रोते देख लिए
पितरां खातर गंगा जी महँ लाते गोते देख लिए
लगी हुई कमर्यां मैं फोटू मल मल धोते देख लिए
रहे तड़पते वस्त्र बिन फेर शाल उढ़ा कै के होगा।।२।।

काढ़े दोष सदा जिनके फेर पाछे तैं गुण गावैं सैं
दु:खी करे जिन्दगी भर फेर मंदिर मैं पत्थर लावें सैं
घूर घूर देखनिये फेर फोटू पै ध्यान जमावैं सैं
सदा उछाली पगड़ी फेर पगड़ी की रस्म निभावैं सैं
दु:ख मंह करी नहीं सेवा फेर पेहवा जाकै के होगा।।३।।

करल्यो जिन्दे जी सेवा या अच्छी किस्मत थारी सै
आशीर्वाद मिले दिल तै जो बेटा आज्ञाकारी सै
खुद अपनी सन्तान भला ना लागे किसने प्यारी सै
कोए अमर ना रह्या जगत मैं आखिर सब की बारी सै
ज्ञानी राम दो हरफी कह दी ढोल बजा कै के होगा।।४।।

यूँ दु:ख पाना हो गया।

श्रीपाल आर्योपदेशक वैदिक मिशनरी
स्वामी भीष्म जी के शिष्य,
खेड़ा हटाना, जनपद बागपत (उ० प्र०)

सदाचार और गई सादगी यूँ दु:ख पाना हो गया।
अपनी भाषा वेश कहाँ गैरों का बाणा हो गया।।

फैशन के चक्कर में फंस गए देखो नर और नारी।
हो क्यों कर उपचार भला नित नई नई बीमारी।
आदर्श पुरातन रहा नहीं मर्याद टूट ली सारी।
तेरे प्रेम में लुटली हूँ यूं गावें कन्या क्वारी।
खाओ पीयो मौज करो बस यही तराना हो गया।।१।।

मक्खन रबड़ी के बदले में चाय और अण्डे आए।
अपनेपन को भूल आप गैरों के दास कहाए।
गाय भैंस घोड़े से नफरत कुत्ते गले लगाए।
इसीलिए आपत्ति के चौतरफा बादल छाए।।
सात्त्विक शुद्ध आहार गया ये कैसा खाना हो गया।२।।

जय शिवजी की जय शंकर की ठग कहीं शोर मचाते।
सच्चे साधु और संन्यासी नहीं नजर में आते।।
पत्नी कहीं पति में अनबन गए पिता पुत्र के नाते।
मुंह आई बकने से कितने दुष्ट नहीं शरमाते।।
नहीं सुनने में आया था जैसा आज जमाना हो गया।।३।।

सांग सिनेमा वालों की कहो किससे छुपी कहानी।
सच पूछो तो इन लोगों ने करदी खतम जवानी।।
बिस्मिल और आजाद भगत कहाँ उधम से लासानी।
स्मरण मात्र से भर आता देखो आंखों में पानी।।
'श्रीपाल' को ऊत कहें तेरा गान पुराना हो गया।।४।।

भगवान आर्यों को पहली लगन लगा दे।

❐श्री पण्डित सत्यपाल जी पथिक

भगवान आर्यों को पहली लगन लगा दे।
वैदिक धर्म की खातिर मिटना इन्हें सिखा दे।।
फिर राम कृष्ण निकलें घर–घर गली–गली से,
अर्जुन व कर्ण जैसे योद्धा रणस्थली से।।
भीष्म से ब्रह्मचारी और भीम महाबली से
गौतम कणाद जैमिनी ऋषिवर पतंजलि से।।
फिर से कोई दयानंद जैसा ऋषि दिखा दे।।
ऐसे हों लाल पैदा खेलें जो गोलियों से।
भूमि को तृप्त कर दें श्रद्धा की झोलियों से
गूंजे यह देश मेरा शेरों की बोलियों से
बिस्मिल गुरु भगत सिंह वीरों की टोलियों से
इन को वतन की खातिर फांसी पे भी हँसा दे।।
कोई लेखराम जैसा गुरुदत्त सा आज होवे।
कोई श्रद्धानन्द होवे कोई हंसराज होवे।
बढ़ती बीमारियों का फिर से इलाज होवे।
नेतृत्व जिनका पाकर उन्नत समाज होवे।
बेधड़क लाजपत सा फिर से पथिक बना दे।
भगवान आर्यों को पहली लगन लगा दे।

माता रोशनी देवी जी का देहावसान : पूर्ण वैदिक रीति से हुआ अन्त्येष्टि संस्कार

अनेक गणमान्य लोगों ने दी श्रद्धाञ्जली

श्रीमती रोशनी देवी जी (धर्मपत्नी स्व० पण्डित चन्द्रभान आर्योपदेशक संस्थापक शांतिधर्मी) का देहावसान गत २४ जून २०१८ को हो गया। २५ जून को उनका अन्त्येष्टि संस्कार जींद में पूर्ण वैदिक रीति से स्वामी रामवेश जी, आचार्य सर्वमित्र जी, श्री रमेश आर्य के सान्निध्य में पण्डित विद्यासागर शास्त्री ने सम्पन्न कराया। उनके बड़े सुपुत्र श्री रमेश चन्द्र आर्य ने मुखाग्नि दी। सैंकड़ों की संख्या में गणमान्य नागरिकों, पारिवारिक सम्बन्धियों, सामाजिक कार्यकत्ताओं ने उन्हें भावभीनी अन्तिम विदाई दी। १ जुलाई रविवार को उनके निमित्त श्रद्धाञ्जली सभा का आयोजन स्थानीय भैरोलाल धर्मशाला में किया गया, जिसमें आसपास व दूरदराज के परिवारीजनों व आर्य सभासदों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धाञ्जली दी। प्रातः ९ बजे से प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पण्डित जगदीश चन्द्र वसु के ब्रह्मत्त्व में बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ में पण्डित रामेश्वर, पण्डित अर्जुन देव, प्रो० धर्मवीर आर्य, मास्टर दयाराम आर्य, यशवीर आर्य, प्रदीप आर्य, अशोक कुमार आर्य आदि विद्वान् भी उपस्थित थे। यज्ञ के पश्चात् श्रद्धाञ्जली सभा में माता जी की सुपौत्रियों ने हृदयस्पर्शी भजन प्रस्तुत किये। पुनः मा० दयाराम आर्य बीकानेर, यशवीर आर्य, जयप्रकाश आर्य, प्रो० धर्मवीर, पण्डित रामेश्वर आदि विद्वानों ने माता जी को श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हुए उनके ध ार्मिकता और कर्मठता के गुणों को स्मरण करते हुए परिजनों को उनके मार्ग का अनुकरण करते रहने को कहा। बहन ऊषा देवी सुपुत्री स्व० चन्द्रभानु आर्य ने माता जी के मार्मिक संस्मरणों को साझा कर सभी को भावुक कर दिया। बहन सावित्री देवी (ढांसा) ने माता जी के साथ आत्मीय संबंधों का उल्लेख करते हुए संस्मरण सांझा किये। कुमारी प्रतिष्ठा आर्या ने मार्मिक कविता के माध्यम से श्रद्धाञ्जली प्रस्तुत की। पण्डित जगदीशचन्द्र वसु ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में जीवन मृत्यु के रहस्यों की ओर इंगित करते हुए जीवन में परमेश्वर के आज्ञानुसार चलने और पाखण्ड/अंधविश्वासों में अपना अमूल्य जीवन व्यर्थ न करने की प्रेरणा की। इस अवसर पर उपस्थित वैदिक विद्वानों का सम्मान भी किया गया और परिवार की ओर से माता जी की स्मृति में उपकारी संस्थाओं को दान राशि भी भेंट की गई। माता जी के निधन पर शोक संवेदना प्रकट करने और सांत्वना प्रदान करने वालों में प्रमुख रूप से इण्डस संस्थाओं के निदेशक श्री सुभाष रयोराण, युवा इनेलो के प्रदेश प्रभारी भ्राता प्रदीप गिल, विधायक डॉ० हरिचन्द्र मिढा के सुपुत्र डॉ० श्रीकृष्ण मिढा, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान मा० रामपाल दहिया, हरियाणा गौरक्षा दल के प्रधान आचार्य योगेन्द्र आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रदेश अध्यक्ष ब्र० दीक्षेन्द्र आर्य, वनवासी कल्याण आश्रम के महासचिव श्री संजीव जिन्दल, वेद प्रचार मण्डल के प्रधान ईश्वर आर्य, मा० जगदीश सिन्धु, वेदप्रकाश बेनीवाल, सतरौल के उपप्रधान सुन्दर सिंह खर्व, स्वर्णकार सभा, जनहित विकास परिषद् व विभिन्न आर्यसमाज संस्थाओं के पदाधिकारीगण, पारिवारिक मित्रगण व सम्बंधी थे। माता जी के तीनों सुपुत्रों सर्वश्री रमेशचन्द्र आर्य, सहदेव समर्पित, रवीन्द्रकुमार आर्य, सुपुत्रियों श्रीमती यशवन्ती आर्या व श्रीमती ऊषा सोनी, पौत्रों सत्यव्रत आर्य, अनुज आर्य, रवीश सोनी, आदित्य आर्य व हर्षित सोनी, दौहित्रों ब्रह्मदत्त आर्य, ओमदत्त आर्य, नरेन्द्र सोनी व जितेन्द्र सोनी ने सभी महानुभावों का आभार प्रकट किया और माता जी के आदर्शों पर चलते रहने का संकल्प व्यक्त किया। माता जी का लम्बी बीमारी के बाद निधन हो गया था। वे ८ वर्ष पूर्व हुए मस्तिष्क आघात के पश्चात् प्रायः बिस्तर पर ही थीं। वे ७४ वर्ष की थीं। वे बहुत मिलनसार, यज्ञप्रेमी और सात्त्विक महिला थीं। उन्होंने अपनी अन्तः प्रेरणा से १९८६ में अपने घर पर हर वर्ष आषाढ़ पूर्णिमा को वेद पारायण यज्ञों का आयोजन प्रारम्भ कराया था जो बाद में मासिक यज्ञ और दैनिक यज्ञ में बदल गया। वे अपनी सीमित आय में से भी दान देने की प्रवृत्ति रखती थीं और यथासंभव आसपास के धार्मिक आयोजनों में उत्साहपूर्वक भाग लेती थीं। उन्होंने अपनी सन्तान को दृढ़ धार्मिक संस्कार प्रदान कर अपना मातृत्त्व सफल कर लिया।

–कार्यालय प्रतिनिधि

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर द्वारा

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योग एवं नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण सप्ताह का आयोजन

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर रेवाड़ी (हरयाणा) में योग एवं चरित्र निर्माण नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण शिविर सप्ताह का आयोजन किया गया। शिविर में लगभग ४५ बालक-बालिकाओं ने नियमित रूप से अभ्यास प्रशिक्षण प्राप्त किया। योग के साथ-साथ प्रतिदिन एक घंटा ६-७ बजे तक चरित्र निर्माण में उपयोगी नैतिकता, शिष्टाचार, अनुशासन व राष्ट्रप्रेम आदि विषयो को लेकर बौद्धिक कक्षाओं का सफलता पूर्वक संयोजन किया गया। योगाभ्यास श्री हरिओम शास्त्री व पीटीआई श्री राजेन्द्र जी (रेवाड़ी) द्वारा प्रातः ५ - ६ बजे के मध्य कराया गया तथा बौद्धिक कक्षाएं पूर्व प्रधानाचार्य श्री राममेहर आर्य, पूर्व प्रक्ता श्री धर्मवीर आर्य (गंगायचा अहीर), प्राचार्य श्री रामतीर्थ जी, श्री रामकिशन शास्त्री, श्री जसवन्त आर्य (रेवाड़ी) व श्री दिनेश आर्य (मोहद्दीनपुर) के द्वारा ली गई। 24 जून को योगाभ्यास के बाद महात्मा यशदेव जी, प्रधान वेद प्रचार मण्डल जिला रेवाड़ी के ब्रह्मत्त्व में यज्ञ का आयोजन किया गया तथा योग सप्ताह का समापन सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उक्त सज्जनों के अतिरिक्त डॉ० महेन्द्र आर्य प्रधान, श्री राजेन्द्र उप प्रधान, श्री विजय कुमार उपमंत्री, मेजर ईश्वर सिंह संरक्षक, दीपचन्द आर्य, वेदप्रकाश आर्य, वेदपाल आर्य, कर्मवीर आर्य व अशोक आर्य आदि उपस्थित रहें। सभी प्रशिक्षुओं को दो-दो पुस्तके 'परा विद्या' व 'कालजयी सन्त : महर्षि दयानन्द सरस्वती' निःशुल्क वितरित की गई।

आत्मानन्द धाम, बिजनौर का वार्षिक महोत्सव

आर्यसमाज के संस्थापक देव दयानन्द सत्य के दूत थे : आचार्य विष्णुमित्र

आर्यसमाज आत्मानन्द धाम, बिजनौर के तत्त्वावधान में आयोजित अष्टम वार्षिक महोत्सव के समापन समारोह में गत 15 जुलाई को यज्ञ भजन, प्रवचन व आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी द्वारा रचित 'आर्यसमाज के दश नियमों का अध्ययन' नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। समारोह में -'वैदिक धर्म का सत्संग आर्यसमाज' विषय पर विभिन्न विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने 'आर्यसमाज' नाम से किसी नवीन कल्पना को न चलाकर सत्य सनातन वैदिक धर्म के सत्संग की स्थापना की है। ऋषि लोग कभी किसी नवीन कल्पना को न चलाकर भगवान् की वाणी का ही प्रचार प्रसार किया करते हैं। भगवान् से पूछ पूछकर बताने वाले समाधिमान् महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्य के दूत थे। सब सत्य वेद में है, वेद से ही संसार में सब सत्य फैला है इस विश्वास के साथ महर्षि दयानन्द सरस्वती कार्य क्षेत्र में अवतरित हुए। जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना और मानना सत्य कहाता है। वेद की पुस्तक हाथ में लेकर उन्होंने जहाँ कहीं भी संसार में असत्य देखा उसका खण्डन किया और जहाँ सत्य दिखा उसे अवश्य कहा। योग साधक स्वामी केवलानन्द सरस्वती ने कहा कि जो नूतन व पुरातन हैं, वे सम्प्रदाय हैं और जो न नूतन और न ही पुरातन है, अपितु सदैव से है और जिसका कभी विनाश नहीं होता है, उसे सनातन अर्थात् धर्म कहते हैं। सम्प्रदायों की रचना कभी ऋषियों के हाथों से नहीं हो सकती है इसलिये महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सम्प्रदायों के निराकरण व सत्य सनातन ईश्वर प्रदत्त वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार के लिये आर्यसमाज की स्थापना की। चिंगारी सान्ध्य दैनिक के सम्पादक सूर्यमणि ने कहा कि आर्यसमाज अविद्या के विनाश व विद्या की वृद्धि में तत्पर है। विद्या से सांसारिक अभ्युदय व जीवन का सर्वोत्तम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त होता है। यही सच्ची धार्मिकता है।

भजनोपदेशक पं० देवेन्द्रदत्त सत्यार्थी ने भजन व गीतों से आर्यसमाज के सत्य सनातन वैदिक धर्म के सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला। यजमान रवीन्द्र कुमार, रेणु, देशबन्धु आर्य व निधि आर्या रहे। नीरज आर्य, सुखलाल आर्य, रमेशचन्द आर्य, नीरज कुमार शर्मा, महाराज सिंह, बाबूराम आर्य, अतरसिंह आर्य, डॉ० विमल, मगन देवी, संगीता आर्या, विवेकशीला आर्या का उल्लेखनीय योगदान रहा।

अटलांटा में इंटरनेशनल कान्फ्रेंस : आचार्य आनंद पुरुषार्थी ने वेदों पर व्याख्यान

हि० प्र० के राज्यपाल श्री देवव्रत आचार्य जी ने किया कान्फ्रेंस का उद्घाटन

-भुवनेश खोसला, मंत्री, आर्य प्र० सभा, मिशिगन अमेरिका

होटल मेरीओट के बड़े हॉल में आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका द्वारा आयोजित ४ दिवसीय कान्फ्रेंस का उद्घाटन भारत से पधारे आचार्य देवव्रत जी (महामहिम राज्यपाल हि० प्र०) ने ओ३म् ध्वजारोहण एवं दीप प्रज्वलन कर किया। नर्मदांचल के आचार्य आनंद पुरुषार्थी ने विभिन्न सत्रों में निम्न लिखित तीन विषयों पर अपने विचार रखे-

1) संतान के निर्माण में माता पिता का योगदान
2) महिलाओ में घर के उत्तरदायित्व व अध्यात्म का समन्वय कैसे संभव?
3) सामाजिक उत्तम कार्यों में संलग्न अन्य संस्थाओं के साथ आर्यसमाज का संपर्क।

आचार्य पुरुषार्थी जी ने शास्त्र का प्रमाण देकर बताया कि हमारी संस्कृति में हम सभी पर माता-पिता, ऋषियों, देवताओं का ऋण माना गया है, जिसको चुकाने के लिये एक उत्तम संतान हर गृहस्थी को उत्पन्न करके अपने राष्ट्र को समर्पित करना होता है। सीता, मदालसा, गंगा, सुभद्रा, लिटिजिया जैसी महिलाओं ने विश्व प्रसिद्ध संतानों लव-कुश, भीष्म पितामह, अभिमन्यु, नेपोलियन बोनापार्ट आदि को जन्म दिया। इन ऐतिहासिक उदाहरणों में हम उनकी सफलता को देखते हैं। आचार्य जी ने 16 बिन्दुओं

की व्याख्या करके स्पष्ट किया कि सभी माता-पिता को किन बातों का पालन करना चाहिए। इसमें प्रातः काल जागरण से लेकर भोजन, वार्तालाप, व्यायाम, व्यवहार, दादा-दादी, नाना नानी के साथ निकटता, शाकाहार, मादक पदार्थो, मांसाहार का त्याग आदि सम्मिलित हैं। एक सत्र में प्रातः 6 से 7 बजे तक योग ध्यान उपासना का भी प्रशिक्षण दिया।

मारीशस, इंग्लैंड, केनेडा, आस्ट्रेलिया सहित अनेक देशों के सुयोग्य विद्वान महानुभावों ने कांफ्रेंस में भाग लिया।

शाबाश ज्योति आर्या : दसवीं कक्षा की परीक्षा में किया उत्तम प्रदर्शन

कार्यालय प्रतिनिधि

जींद, गीता विद्या मन्दिर उचाना मण्डी, जिला जींद की छात्रा ज्योति आर्या ने दसवीं कक्षा में 94.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपनी आर्य प्रतिभा का परिचय दिया है। कुमारी ज्योति अपने विद्यालय में चौथे स्थान पर रही है। ज्ञातव्य है कि ज्योति आर्यसमाज के प्रसिद्ध उपदेशक श्री पण्डित रामेश्वर आर्य (तारखा) की सुपौत्री हैं और वैदिक विद्वान् प्रध्यापक सुनीलदत्त शास्त्री जी की सुपुत्री हैं।

बिटिया ज्योति बहुमुखी प्रतिभा की धनी है। वह अवसर मिलने पर अपने पूज्य दादाजी और पिता जी के साथ आर्यसमाज के सम्मेलनों में भी भाग लेती है और अपनी बहनों के साथ मधुर भजन प्रस्तुत करती है। इस कार्य के लिये ज्योति को ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट द्वारा पुरस्कृत भी किया जा चुका है। ज्योति को सम्पूर्ण वैदिक संन्ध्या और हवन कण्ठस्थ है। वह पूरे परिवार के साथ हवन में पूरी तन्मयता से भागीदारी करती है। हम आर्य पुत्री के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह बेटी को और अधिक सामर्थ्य प्रदान करे।

आपकी सन्तान

(पृष्ठ ११ का शेष)

आपका कोई मित्र या रिश्तेदार भी करता है तो उसे स्पष्ट रूप से इन्कार कर दें। पति-पत्नी भी परस्पर बच्चों के सामने लड़ाई-झगड़ा न करें।

५- बच्चों के पीछे से कभी-कभी उनकी पुस्तकों, कापियों या सामान का स्वयं निरीक्षण करें। कहीं ऐसा तो नहीं है कि कोई आपत्तिजनक बात या चित्र आपको मिले।

६- प्रतिदिन सुबह-शाम उनके लिये कुछ समय निकालिये। उनकी बातें, उनकी समस्याएँ सुनिये। उनका समाधान करिये और उन्हें उचित मार्गदर्शन दीजिये।

७- उन्हें धार्मिक शिक्षा भी अवश्य दें। सच्चे आस्तिक बनाईये। धर्म (वैदिक धर्म) के प्रति उनके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न कीजिये। रविवार या अन्य विशेष उत्सव आदि में उन्हें अपने साथ सत्संग में लेकर जाएं। जो कोई विद्वान् या उपदेशक आदि उत्सव में आये हों, उनसे बच्चों को मिलवाईये। घर पर उनका वार्तालाप करवाईये।

८- बच्चों के गुरु बनने का प्रयास कीजिये। माता-पिता ही संतानों के प्रथम गुरु होते हैं।

९- उन्हें अधिक टी०वी० देखने या मोबाईल फोन का प्रयोग करने से बचाईये। टी०वी० या फिल्मों से उनके चरित्र में प्राय: दोष ही उत्पन्न होते हैं। अपनी देखरेख में उन्हें स्वस्थ मनोरंजन या शिक्षाप्रद कार्यक्रम ही दिखायें।

१०- उन्हें परिश्रम करने की आदत डालें। प्रयत्न कीजिये कि अपने छोटे-मोटे कार्य वे स्वयं ही करें। अपनी पुस्तकें, कपड़े, जूते आदि उचित स्थान पर वे स्वयं रखें और स्वयं ही संभालें। इससे उनमें स्वावलम्बन की भावना जागेगी।

११- उनके कपड़ों का सही चुनाव कीजिये। कुछ भी पहन लेना असभ्यता है। आज प्राय: लड़कियाँ ऐसे कपड़े डालती हैं जो देखने वालों को भी अच्छे नहीं लगते। ध्यान रखिये फैशनेबल, भड़काऊ कपड़े दूषित मनोवृत्ति के परिचायक हैं। तन पूरा ढ़का रहे। कपड़े शरीर को ढ़कने के लिये होते हैं उघाड़ने के लिए नहीं। आज भारतीय संस्कृति को रोग लग चुका है। दूषित मनोवृतियाँ समाज में पनप रही हैं। इसमें कपड़ों की एक महत्वपूर्ण भूमिका है।

और भी कई बातें हो सकती हैं लेकिन यहाँ पर मुख्य रूप से हमने संकेत कर दिया है। यह बात मन में अवश्य रखिये कि आपकी संतानें आपके लिये सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। यदि वे बन गई तो जानिये सब बन गया और कहीं बिगड़ गई तो लाख धन दौलत हो, सम्पत्ति हो, बेकार हो जाती है। यदि हमारे बच्चे हमारा सम्मान करना सीख गये तो जीवन सफल हो जाता है, नहीं तो आज परिवार नर्क तो बनते जा ही रहे हैं।

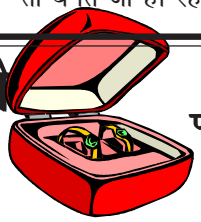

ओ३म्

फोन : 9416545538
9992286793

सत्यम् स्वर्णकार

हमारे यहाँ सोने व चांदी के जेवरात आर्डर पर तैयार किये जाते हैं।

प्रो0 सत्यव्रत आर्य सुपुत्र रमेश चन्द्र आर्य

मेन बाजार, जीन्द (हरि०)-१२६१०२

ईश्वर में अविश्वास (पृष्ठ २३ का शेष)

तो समझना चाहिये कि इसमें हमारी भलाई (Adverrity) है, क्योंकि विपत्तियाँ मनुष्य को ऊँचा उठाती है। संसार के महापुरुषों पर विपत्तियाँ आई हैं। विपत्तियाँ तो प्रभु की याद दिलाने के लिए आती हैं, परन्तु लोग फिर भी ईश्वर को भूल जाते है। मृत्य क्या है? प्रकृति और जीवात्मा के मिलाप का नाम जन्म और प्रकृति तथा जीवात्मा के वियोग का नाम मृत्यु है। जो उत्पन्न हुआ है, वह मरेगा अवश्य। योगेश्वर कृष्ण ने भी गीता में ऐसा ही कहा है:-

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च।।

जो उत्पन्न हुआ है वह अवश्य मरेगा और जो मरेगा उसका जन्म भी अवश्य होगा। जब जन्म के पीछे मृत्यु और मृत्यु के पश्चात् जन्म लगा हुआ है तो घबराहट और निराशा किस लिए?

(६) पापियों को सुख में और पुण्यात्माओं को दु:ख में देखकर ईश्वर में अविश्वास पैदा होता है।

समाधान-पापियों को सुख में और पुण्यात्माओं को दु:ख में देखकर लोग कारण और कार्य का सम्बन्ध लगा लेते हैं। इसी उल्टी धारणा से ईश्वर में अविश्वास उत्पन्न होता है। एक व्यक्ति कर्म तो अच्छा कर रहा है और उसका फल उसे दु:ख मिले, यह कदापि नहीं हो सकता। अच्छा कर्म करते हुए दु:ख आ गया यह बात तो ठीक है, परन्तु यहाँ कार्य और कारण का (cause & effect) सम्बन्ध नहीं है। दूसरी ओर एक व्यक्ति कार्य बुरा कर रहा है और उसे फल अच्छा मिल जाये, यह भी ठीक नहीं। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जायेगी। एक व्यक्ति ने चोरी की और फिर सन्ध्या करने लगा। पुलिस आई और उसे पकड़ कर ले गई। इस व्यक्ति को सन्ध्या के कारण नहीं पकड़ा गया। पापियों को सुख और पुण्यात्माओं को दु:ख पूर्व-जन्म के कर्मों के कारण है।

(७) घातक का न पकड़ा जाना और निर्दोष का फँस जाना-

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कत्ल करने वाला बच जाता है और निर्दोष व्यक्ति फँस जाता है तो लोग कहते हैं कि यह क्या प्रबन्ध है?

समाधान-यह ठीक है कि कभी-कभी निर्दोष व्यक्ति फँस जाते है। फँसने वाला व्यक्ति निर्दोष अवश्य है परन्तु उसका पहला कोई ऐसा कर्म हो सकता है जिसका दण्ड उसे भोगना शेष हो। और बहुत से व्यक्ति पकड़े जाने के पश्चात् छूट भी जाते हैं।

(८) विद्वानों का निर्धन और मूर्खों का धनी होना-

यह भी ईश्वर-अविश्वास का एक कारण है। परन्तु सभी विद्वान् निर्धन हों ओर सभी मूर्ख धनी हों यह बात गलत है। स्वामी दर्शानानन्द जी भूतपूर्व श्री कृपाराम जी अद्भुत तार्किक और विद्वान् होते हुए भी बहुत धनवान् थे। ऐसे अनेकों उदाहरण हैं।

(९) भगवान् के कामों में कोई व्यवस्था नहीं जैसी मनुष्य के कार्यों में है।-

भगवान् की रचना में कोई क्रम नहीं है। एक बाग और पहाड़ को लो। बाग में नींबू की लाईन एक ओर, सन्तरे की लाइन एक ओर और आम के वृक्ष अलग लाईन में, प्रत्येक वस्तु एक नियम में होगी। इसके विपरीत पहाड़ पर एक वृक्ष यहाँ, एक वृक्ष वहाँ है। कोई कहीं और कोई कहीं, किसी प्रकार का कोई क्रम नहीं हैं।

समाधान-परमात्मा की सृष्टि में क्रम है और अत्यन्त क्रम है। परमात्मा की सृष्टि-रचना में क्रम न मानना ऐसा ही है जैसे एक चींटी मनुष्य के ऊपर चढ़ जाये और पेट तथा छाती के ऊपर जाकर सोचे- यह बड़ा अच्छा मैदान है। फिर ऊपर चलकर दाढ़ी और मूंछो में पहुँच जाये तो कहे, यहाँ तो बड़ा भारी जंगल है, नाक के छिद्रों पर आकर कहे कि यहाँ तो छिद्र हो रहे हैं और ऊपर चढ़कर आँखों के गड्ढों को देखकर कहे कि यहाँ तो बड़ी ऊबड़-खाबड़ जगह है। इस प्रकार एक चींटी की दृष्टि में यह शरीर बेढंगा है। कहीं मैदान, कहीं जंगल हैं, कहीं छिद्र हैं और कहीं ऊबड़-खाबड़ है, परन्तु किसी शरीर के विशेषज्ञ से पूछिये तो वह कहेगा कि यह तो प्रभु की सर्वोत्कृष्ट रचना है।

एक और उदाहरण लीजिए, एक शब्दकोश में वर्णमाला के अनुसार क्रम होगा। परन्तु एक विद्वान की पुस्तक में शब्दकोश का क्रम नहीं होता, अपितु विद्या-सम्बन्धी क्रम होता है। इसी प्रकार प्रभु की रचना में बाग का क्रम नहीं होता है, अपितु एक विशिष्ट प्रकार का क्रम होता है जो ईश्वर की बुद्धिमता और सर्वोत्कृष्ट रचना का पूर्ण परिचायक होता है।

ईश्वर-अविश्वास के इन आक्षेपों पर तनिक विचार करेंगे तो यह स्पष्ट हो जाता है कि ईश्वर-अविश्वास के आक्षेप सर्वथा निराधार हैं। यदि ईश्वर को उसके वास्तविक रूप में लोगों के सामने रक्खा जाये और घर-घर ईश्वर-भक्ति और ईश्वर पूजा हो तो फिर वह दिन दूर नहीं जब भारत का बच्चा-बच्चा फिर आस्तिक होगा।

(आर्य समाज बाजार सीताराम, दिल्ली में दिया गया एक भाषण, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित)

बिन्दु बिन्दु विचार संकलन

❒भलेराम आर्य, सांघी वाले 9416972879

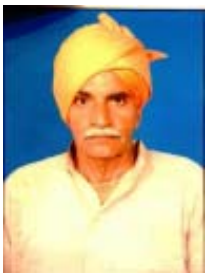

❖ बिना पुस्तकों के ईश्वर मौन है, न्याय निद्रित है, प्राकृतिक विज्ञान स्तब्ध है, दर्शन लंगड़ा है, शब्द गूंगे और सभी वस्तुएँ पूर्ण अंधकार में हैं। –बार्थालिन

❖बच्चे राष्ट्र की महान विभूति हैं, जिनपर देश का भविष्य टिका है। –महामना मालवीय

❖किसी कार्य का आरम्भ उसका सबसे महत्त्वपूर्ण अंग होता है। –प्लेटो

❖हंसमुख स्वभाव दीर्घायु का सर्वोत्तम साधन है। –बेकन

❖लकड़ी के ऊपर रंग और रोगन लगाने से वह कीड़ा नहीं मरता जो उसके भीतर बैठा हुआ उसका कलेजा खाए जाता है। –मुंशी प्रेमचन्द

❖अच्छी पुस्तकों के पास होने से हमें अपने भले मित्रों के साथ न रहने की कमी नहीं खटकती। जितना मैं पुस्तकों का अध्ययन करता गया उतनी ही अधिक मुझे उनकी विशेषताएँ मालूम हुईं।–गांधीजी

❖छोटी छोटी बातों से पूर्णता मिलती है और पूर्णता कोई छोटी चीज नहीं है।

❖हाथी की शोभा मद से, सरोवर की कमल से, रात्रि की पूर्ण चन्द्रमा से, स्त्री की शील से, घोड़े की चाल से, मन्दिर की नित्य होने वाले उत्सवों से, वाणी की व्याकरण से, वापी की हंसों के जोड़ों से, सभा की विद्वानों से और सत्पुत्र से कुल की शोभा होती है।

❖हे मनुष्यो! मैंने तुमको सहृदय और बुद्धिमान, द्वेषरहित बनाया है। तुम एक दूसरे के साथ इस प्रकार व्यवहार करो जैसे गाय अपने बच्चे के साथ करती है। –वेद

स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य के जीवन पर एक और पुस्तक

प्रिय पाठकगण! हरियाणा के प्रमुख साहित्यकार, ५० से अधिक भजन इतिहासों के लेखक, शांतिधर्मी के संस्थापक और १७ वर्ष तक सम्पादक रहे स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य भजनोपदेशक के जीवन और साहित्य की परिचायक एक पुस्तक 'चन्द्रभानु आर्य : व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व' २०१६ में प्रकाशित हुई थी। अब उनके जीवन और कार्यों पर एक और पुस्तक का सम्पादन हरियाणा के प्रमुख युवा साहित्यकार गुगनराम सोसायटी के सचिव, डॉ० नरेश सिहाग बोहल (सम्पादक बोहल शोध मञ्जूषा शोध पत्रिका एवं विधि परामर्शक शांतिधर्मी हिन्दी मासिक) कर रहे हैं। यह एक शोध पुस्तक होगी और ISBN के साथ प्रकाशित होगी। इस पुस्तक के लिए आप पण्डित चन्द्रभानु आर्य के जीवन और कार्यों से सम्बंधित अपने शोधात्मक आलेख/ साहित्यिक विश्लेष्णात्मक लेख और उनके जीवन के संबंध में संस्मरणात्मक लेख भेज सकते हैं।

कृपया संबंधित सामग्री ईमेल द्वारा या पंजीकृत डाक से १५ दिन तक अधोलिखित किसी पते पर अवश्यमेव भेज दें। स्व० पण्डित चन्द्रभानु आर्य के साहित्य के लिए आप शांतिधर्मी कार्यालय से सम्पर्क कर सकते हैं।

विशेष : कृपया अपने आलेख पंजीकृत डाक/कूरियर या ईमेल द्वारा ही भेजें।

सहदेव समर्पित (9416253826)
shantidharmijind@gmail.com
सम्पादक शांतिधर्मी,
७५६/३ आदर्श नगर पटियाला चौक जींद–१२६१०२

डॉ० नरेश सिहाग (9466532152)
nksihag202@gmail.com
सम्पादक बोहल शोध मंजूषा,
२०२, न्यू हाऊसिंग बोर्ड भिवानी–१२७०२१

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

स्वर्गीय माता रोशनी देवी जी : नम आंखों से दी अंतिम विदाई

पूर्ण वैदिक रीति से किया गया अंत्येष्ठि संस्कार

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (जुलाई, २०१८) P.R. No. : PKL 150-A/2017-19

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्र है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरूचिपूर्ण सामग्री होती है।

- ☆ **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।
- ☆ **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।
- ☆ **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का सन्देशवाहक है।
- ☆ **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।
- ☆ **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।
- ☆ **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

मूल्य : एक प्रति : 10.00 वार्षिक : 120.00 आजीवन : 1000.00

शान्तिधर्मी कार्यालय
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)
जीन्द-126102 (हरियाणा)
फोन 9416253826, 9996338552
E-mail : shantidharmijind@gmail.com